

आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021-23
“चतुर्वेदी चन्द्रिका” जुलाई 2023

स्थापना - माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 36
मूल्य : 20/-



चतुर्वेदी चन्द्रिका



। वर्ष -24 । अंक-07 । आषाढ-श्रावण/पुरुषोत्तम मास । जुलाई 2023

ॐ नमः शिवाय

जय
महाकाल

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

मांगलिक अवसरों पर दीजिये अपनों को अनमोल तोहफा



ब्रज की रसोई

माथुर चतुर्वेदियों के
सुस्वादु भोजन पर
आधारित रेसिपी बुक

मूल्य
₹320

संस्कार गीत
(माथुर चतुर्वेदियों
की समृद्ध परंपरा)

मूल्य
₹400



चतुर्वेदी चंद्रिका
(सामाजिक बदलाव
के 125 साल)

मूल्य
₹350

मांगलिक चौक



₹ 250
प्रति चौक



₹ 200
प्रति चौक



आज ही बुक करें

आईसेक्ट, स्कोप कैम्पस, एन एच-12,
होशंगाबाद रोड, भोपाल - 462047 (म.प्र.)

संपर्क :

+91-755-2432801,
9039535983

सभी महत्वपूर्ण पुस्तकें और रंगीन चौक एक साथ खरीदने पर पायें कुल मूल्य ₹2570 पर 10 प्रतिशत की छूट
(₹2313 चुकायें + डाक खर्च अलग) और पायें ब्रज की होलियां/ विवाह/चौक के गीतों की सीडी मुफ्त.

डॉक्टर दिवस पर समाज के सभी डॉक्टरों को बधाई



डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
(दिल्ली)



डॉ. अरविन्द चतुर्वेदी
(गाज़ियाबाद)



डॉ. निखिल चतुर्वेदी
(आगरा)



डॉ. निशीथ चतुर्वेदी
(गुरुग्राम)



डॉ. अपूर्व चतुर्वेदी
(फिरोजाबाद)



डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी
(लखनऊ)



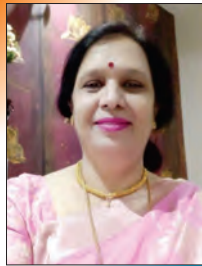
डॉ. मलय चतुर्वेदी
(कानपुर)



डॉ. हेमंत चतुर्वेदी
(जयपुर)



डॉ. हेमेन्द्र चतुर्वेदी
(आगरा)



डॉ. अंजना चतुर्वेदी
(भोपाल)



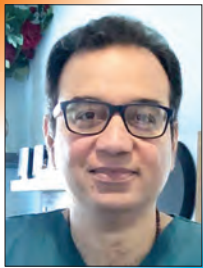
डॉ. मनीष चतुर्वेदी
(गाज़ियाबाद)



डॉ. प्रशांत चतुर्वेदी
(लखनऊ)



डॉ. मोहित चतुर्वेदी
(जयपुर)



डॉ. विक्रम चतुर्वेदी
(कोलकाता)



डॉ. जया चतुर्वेदी
(ऋषिकेश)



डॉ. अशोक चतुर्वेदी
(लखनऊ)



डॉ. संजय चतुर्वेदी
(आगरा)



डॉ. अंशुमान चतुर्वेदी
(जयपुर)

आप हमारे लिए प्रेरणास्वरूप हो।

आपसे प्रेरित होकर हम चलते हैं आपने दिखाई हुई राह पर।
जीवन की यात्रा में अग्रणी हो आप, आप को बधाईयाँ देते हैं हम।

आप विचारों की उड़ान हो, आगे बढ़ते हो।
मुसीबतों में दृढ़ता और साहस का प्रतीक हो।
आप के नेतृत्व में नयी ऊँचाइयों को पाते हैं हम।

यशस्विता की सीख सबको देते हो,
नए सपनों को सच करते हो।
सफलता की ऊँचाइयों तक, तुम्हारे साथ हैं हम।
स्वास्थ्य, सुख, और समृद्धि की कामना करते हैं हम।

श्री. दिलीपजी चौबे

संस्थापक, रेखा गैस एजन्सी

जन्मदिन की _____
हार्दिक शुभकामनाएं !

समस्त कर्मचारी वृंद



दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव.
फोन : (0257) 2221095, 2221195, 2225195, 2228495.





अंक 07

जुलाई 2023, वर्ष - 24

समापति

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

president@chaturvedimahasabha.in

सचिव

श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी

मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष

श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी

मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल

डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा

पूर्व संपादक

श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ

श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक

शशांक चतुर्वेदी

पत्र व्यवहार का पता:

'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255

गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल

(मध्यप्रदेश)

मोबा. 9826086879

ई-मेल :

sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्ति विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	6
संपादकीय	7
अप्रत्याशित कार्डियक अरेस्ट	9
हरद्वार की महिमा	11
सम्पादक के नाम पत्र	12
जामुन	13
ऑक्सीजन- प्राणवर्धक या प्राणहर्ता वायु	15
रमणरेती माहात्मयः	16
तलाक तलाक तलाक	17
सिद्धहस्त गायक किशोर चतुर्वेदी	19
बांग्लादेश में हिन्दू ऐतिहासिक व राष्ट्रीय मंदिर	21
कोशिश	23
बीमा- एक जीवन कवच	24
चतुर्वेदी और उनकी विरासत: एक दृष्टिकोण	26
कलूटी कहे या गुलबिया	27
समाज समाचार	30
शाखा समाचार	31
बिछड़े स्वजन	32

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

: Account No. :

1006238340

: IFSC Code :

CBIN0283533

: Branch :

Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED



1029229644cbn

BHIM LPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा

आजीवन सदस्यता शुल्क

1000 + 501 = 1501/-

महासभा सत्र + पत्रिका

वार्षिक सदस्यता शुल्क -

101 + 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात



● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

Email : president@chaturvedimahasabha.in

भगवान भोलेनाथ के प्रिय माह सावन माह का आरंभ इस महीने हो रहा है। इसी के साथ इस वर्ष अधिक का महीना पुरुषोत्तम माह भी प्रारंभ होगा।

विगत कुछ समय पूर्व कानपुर समाज ने श्री स्वतंत्र कुमार जी को कानपुर सभा के अध्यक्ष पद के लिए निर्विरोध निर्वाचित कर एक अच्छी और स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपरा का आरंभ किया। स्वतंत्र प्रकाश जी, प्रवेश जी व समस्त टीम को हार्दिक बधाई। साथ ही ग्वालियर समाज द्वारा भाई अजय जी को सर्वसम्मति से ग्वालियर सभा का अध्यक्ष मनोनीत

किया। अजय जी, आकाश जी व समस्त टीम को हार्दिक बधाई।

महासभा का सदस्यता अभियान को आप सभी का भरपूर सहयोग व समर्थन मिला। इसके लिए बहुत-बहुत आभार। इस अभियान से महासभा को आपके सहयोग से दृढ़ता व मजबूती प्राप्त होगी। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा हमारे समाज की 100 वर्ष से ज्यादा पुरानी शीर्ष संस्था है। इस बात का हमें गर्व है। हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित इस संस्था ने विगत 100 वर्षों में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। किसी संस्था के द्वारा 100 वर्ष पूर्ण करना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। यह समाज की एक जुटता व मजबूती का घोटक है। समाज सेवा आज के समय में बहुत ही श्रमसाध्य व कठिन कार्य है। जिसको हमारे पूर्वजों ने बखूबी निभाया। आज की जीवन यापन की व्यस्तता भरे जीवन में यह कार्यकर्ता भीड़ में कहीं खो सा गया है।

समाज के मेधावी बच्चों के चित्र देखकर व उनकी सफलता के समाचार पढ़ मन प्रफुल्लित होता है क्योंकि यही बच्चे हमारे समाज का व हमारा उज्ज्वल भविष्य हैं।

समाज हित की योजनाओं के सतत क्रियान्वयन हेतु आप सभी के सहयोग का बहुत-बहुत आभार। भविष्य में भी आप सभी का सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

नित नई जानकारी वहां लेखों के साथ पत्रिका का प्रकाशन एक सुखद अनुभूति देता है समाज के नए-नए लेखकों का इस क्रम में जोड़ना समाज की बौद्धिक क्षमताओं का घोटक है। हमारे आलेखों में ज्ञानवर्धक व समाज की रुचि के अनुकूल विषय वस्तु का प्रकाशन चतुर्वेदी चंद्रिका की उपलब्धि व सर्वव्यापकता का घोटक है। इसके लिए चतुर्वेदी चंद्रिका के सभी सतत लेखकों का आभार।

डॉ. दिवस पर समाज के सभी डॉक्टरों को बधाई।

कार्यकारिणी बैठक की सूचना

श्री माथुर सभा आगरा (रजि.) के द्वारा 26 मार्च 2023 को ग्राम फ़रौली कार्यकारिणी बैठक दिये गये निमंत्रण को स्वीकार करते हुए श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की आगामी कार्यकारिणी बैठक 13 अगस्त 2023, रविवार को आगरा में आयोजित किया जाना निर्धारित किया गया है। निवेदन है कि समाज चिंतन में सहयोग हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना 15 जुलाई 2023 तक मुझे अवश्य देने की कृपा करें।

मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 9871170559



संपादकीय



सफलता के लिए कयास नहीं प्रयास की आवश्यकता होती है। जहाँ हमारे द्वारा पूरा प्रयास किया जाता है, वहाँ सफलता मिलने की संभावना शत प्रतिशत होती है। कयास वे ही लगाते हैं। जिनके प्रयासों में कमी होती है। प्रयास करने वाले मात्र सफलता की प्रतीक्षा करते हैं, क्योंकि उन्हें अपने प्रयास रूपी पुरुषार्थ पर पूर्ण विश्वास होता है। जीवन में सफल होने के लिए भरपूर प्रयास करें। प्रयासों में कमी ही कयास लगाने के लिए बाध्य करती है। कयास, पूर्वानुमान का दूसरा नाम है। कयास कभी-कभी गलत भी सिद्ध होते हैं, लेकिन प्रयास अक्सर सफल होते हैं। इसलिए अपने प्रयासों पर भरोसा करें। जिससे उसकी सफलता निश्चित हो। पूरे मनोयोग के साथ प्रयास करने से सफलता हासिल होती है। आशाएं सदैव स्वयं से ही रखना चाहिए, क्योंकि यही एक मात्र हमारी खुशियों का कारक है। दूसरों से आशाएं सदा ही दुख का कारण होती हैं, क्योंकि इनके पूरा होने की संभावनाएं कम होती हैं। जीवन में सदैव अपने प्रयासों को परिणाम में बदलने के लिए पुरजोर कोशिश में लगे रहना चाहिए। हमारे छोटे-छोटे प्रयास निश्चित ही हमें बड़े कार्य को सकारात्मक परिणाम देने के लिए प्रेरित करते हैं और सफल भी बनाते हैं। सदैव संघर्षशील और लक्ष्य के प्रति प्रयासरत रहें, यही सफलता का मूलमंत्र है।

विगत दिनों एक बहुत ही सुखद अनुभूति हुई। लगभग 15 किलो का एक पार्सल मेरे घर आया। जिसमें चतुर्वेदी समाज की अनेक बहुमूल्य प्रकाशित कृतियों का खजाना था। मेरे संग्रह में यह अमूल्य कृतियों को जोड़कर मैं गौरान्वित हूँ। मुझे यह अमूल्य कृतियों का खजाना श्री राकेश चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. पृथ्वी नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/कोलकाता) द्वारा आशीर्वाद स्वरूप भेजी गई थी। स्व. पृथ्वीनाथ जी महासभा के पूर्व सभापति रहे हैं। इस सुखद अनुभूति के लिए बहुत-बहुत आभार।

कानपुर सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष के रूप में स्वतंत्र प्रकाश जी व मंत्री के रूप में प्रवेश जी एवम समस्त टीम के निर्वाचन पर हार्दिक बधाई। बड़े भाई साहब स्वतंत्र प्रकाश जी का निर्विरोध निर्वाचन एक सुखद अनुभूति है। कानपुर सभा व समाज को बधाई। इसी के साथ ग्वालियर सभा के अध्यक्ष भाई अजय जी, मंत्री - आकाश जी तथा समस्त टीम के सर्वसम्मति से चयन पर हार्दिक बधाई। ग्वालियर सभा व समाज को बधाई।

समाज के गौरव, लब्ध प्रतिष्ठित, स्वनामधन्य, देश भर में ख्याति प्राप्त लखनऊ के गायक श्री किशोर जी का साक्षात्कार श्री दिलीप जी (लखनऊ) के सहयोग से प्रकाशित किया जा रहा है। डॉ. हेमंत जी (जयपुर) की हृदय संबंधी जानकारी का और मोती प्रस्तुत है। साथ ही पड़ोसी देश बांग्लादेश में स्थित ढाकेश्वरी देवी के मंदिर का पूर्ण विवरण चित्रा जी (भोपाल) के सहयोग से प्रस्तुत है इसी के साथ बीमा पर जानकारी पर आलेख। बड़ी खुशी की बात है कि हमारी लेखकों की टीम में 4 नए लेखकों की (कमलेश जी, (गुना), अभिन्न जी (अलीगढ़), निखिल जी (लखनऊ) व सुरेंद्र जी (इंदौर) की बढ़ोतरी हुई है। उनके आलेख भी प्रस्तुत हैं।

इस माह भी समाज के मेधावी छात्रों के समाचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं। डॉक्टर दिवस पर इस माह समाज के ख्याति प्राप्त डॉक्टरों के उपलब्ध चित्रों का प्रकाशन किया जा रहा है। भगवान शिव के माह सावन के साथ पुरुषोत्तम माह का प्रारंभ इस महीने में हो रहा है।

आप सभी को सावन माह व पुरुषोत्तम माह की हार्दिक शुभकामनाएं!!!!

- शशांक चतुर्वेदी

चतुर्वेदी चन्द्रिका



श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023



संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी (भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, (भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री मनोज चतुर्वेदी (बेंगलोर), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई)

मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)

संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)

कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक, चतुर्वेदी चंद्रिका - श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल)

ऑडिटर - शिव एसोसिएट, नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री दिलीप सिंहकरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी (बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे (भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी “लालन” (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे (गोंदिया), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फरीदाबाद), डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा)।

स्थायी आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी “अन्नी” (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी “पुत्तन” (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेडा), श्री राजेश चतुर्वेदी, “गुड्डू” (कोलकाता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, “मोहित” (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), श्री मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मनोज मिश्रा (मैनपुरी), श्री संजय चतुर्वेदी (फरीदाबाद)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा), श्रीमती अरुणा चतुर्वेदी (कोटा), श्रीमती कीर्ति मिश्रा (हैदराबाद)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा), श्री सुनील चतुर्वेदी (जयपुर), श्री सावन चतुर्वेदी (आगरा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

अप्रत्याशित कार्डियक अरेस्ट

- डॉ हेमन्त चतुर्वेदी
हृदय रोग विशेषज्ञ
इंटरनल हॉस्पिटल, जयपुर

लक्षणः

अप्रत्याशित कार्डियक अरेस्ट एक अचानक अप्रत्याशित मौत होती है जो कि हार्ट का फंक्शन एक दम से बंद हो जाने के कारण होती है। हार्ट डिजीज से होने वाली मौतों में से 50% मौतें सडन कार्डियक अरेस्ट से ही होती हैं। सामान्यतः यह 30-40 वर्ष की आयु में देखा जाता है यानी कि अपेक्षाकृत युवावस्था। इसलिए इसके बारे में जानना काफी ज्यादा महत्वपूर्ण है। सडन कार्डियक अरेस्ट हार्ट अटैक नहीं होता।

इसमें हार्ट के इलेक्ट्रिकल सिस्टम में अचानक गड़बड़ हो जाने से हार्ट की धड़कन अनियमित एवम अनियंत्रित हो जाती है। जिससे धड़कने खतरनाक तरीके से काफी तेज हो जाती हैं। इस अवस्था को वेंट्रिकुलर फिब्रिलेशन कहते हैं। हार्ट सही ढंग से पम्पिंग नहीं कर पाता। जिससे शरीर के सभी अंगों में ब्लड का प्रवाह सही तरीके से नहीं हो पाता। ब्रेन में ब्लड का प्रवाह रुकने के कुछ मिनटों में ही इंसान बेहोश हो जाता है और अगर इसी अवस्था में तुरंत एमरजेंसी इलाज चालू न किया जाए तो मृत्यु निश्चित होती है।

एमरजेंसी इलाज में कार्डिओ पल्मोनरी रिससिटेशन यानी चेस्ट कंप्रेशन, छाती को जोर से एवं तेजी से बार बार दबाना जिससे पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन फेफड़ों व ब्रेन में पहुंच पाती है। जब तक कि हार्ट की धड़कन नॉर्मल नहीं हो जाती। वेंट्रिकुलर फिब्रिलेशन की अवस्था में मशीन के माध्यम से इलेक्ट्रिकल शॉक दिया जाता है जिससे हार्ट की धड़कन को वापस से नॉर्मल लाने का प्रयास किया जाता है। इस तरह की मशीनें आजकल पब्लिक प्लेसेस पर लगाई जाती हैं। साथ ही आम लोगो को इसके बारे में जागरूक किया जाता है, ताकि अगर कभी किसी के भी साथ इस तरह की अवस्था आ जाये तो इसका उपयोग करके उस व्यक्ति की जान बचाई जा सके। एमरजेंसी में इन सबके साथ ही कुछ जीवन रक्षक दवाएं, धड़कनों को नियमित व नियंत्रित करने वाली दवाएं, साथ ही ब्लड प्रेशर बढ़ाने वाली दवाएं दी जाती हैं।

कुछ व्यक्तियों को अपनी हार्ट की धड़कनें एक दम से बढ़ती हुई महसूस होती हैं और साथ ही चक्कर आने लगते हैं। ये ही वो लक्षण है, जो कि हार्ट की धड़कनों में होने वाली इस डिजीज के लिए अलर्ट कर देते हैं। पर हर बार इस तरह के प्रारंभिक लक्षण आये ये जरूरी नहीं। लगभग 50% केस में बिना किसी प्रारंभिक लक्षण के सडन कार्डियक अरेस्ट हो जाता है।

रिस्क फैक्टरः

- सडन कार्डियक अरेस्ट के कई कारण होते हैं जो कि निम्न हैं
1. 75% सडन कार्डियक अरेस्ट ऐसे व्यक्तियों में होता है जिनमें पहले हार्ट अटैक हो चुका हो और हार्ट की पम्पिंग कैपेसिटी 35 % से कम हो चुकी हो।
 2. हार्ट अटैक के पहले 6 महीने में सडन कार्डियक अरेस्ट की संभावना सबसे ज्यादा होती है।
 3. जैसा कि हम जान चुके हैं की सडन कार्डियक अरेस्ट कोरोनरी आर्टरी डिजीज में सबसे ज्यादा देखने को मिलता है इसलिए हार्ट डिजीज के सभी रिस्क फैक्टर जैसे धूम्रपान, अल्कोहल का सेवन, व्यायाम नहीं करना, जंक फूड का सेवन भी इसके लिए भी रिस्क रखते हैं।
 4. कुछ जन्मजात हार्ट की बीमारियों में भी सडन कार्डियक अरेस्ट की संभावना काफी ज्यादा होती है।
 5. हार्ट फेलियर वाले मरीज जिनमें हार्ट की पम्पिंग कैपेसिटी 30% से कम होती है उनमें सडन कार्डियक अरेस्ट की संभावना 6-9 गुना ज्यादा होती है।
 6. कुछ तरह की हार्ट की मांसपेशियों की बीमारी जिन्हें कार्डियोमायोपैथी कहते हैं। उनमें सडन कार्डियक अरेस्ट की संभावना काफी ज्यादा पाई जाती है।
 7. कई बार गुर्दों की बीमारी के कारण शरीर में इलेक्ट्रोलाइट के असंतुलन के कारण विशेषतः पोटैशियम की अधिकता के कारण भी सडन कार्डियक अरेस्ट देखा जाता है।
 8. कुछ तरह की दवाओं के सेवन से भी सडन कार्डियक अरेस्ट आ खतरा काफी बढ़ जाता है इसीलिए अक्सर ये सलाह दी

चतुर्वेदी चन्द्रिका

जाती है कि कोई भी दवा खासकर एंटीबायोटिक चिकित्सक परामर्श के बिना कभी न लें।

पहचान एवम जांच:

सडन कार्डियक अरेस्ट अक्सर अपेक्षाकृत युवावस्था में देखने को मिलता है। अतः इसे सभी व्यक्तियों में जिनमें हार्ट की धड़कनें अनियमित एवम अनियंत्रित महसूस होती हो, जिनमें हार्ट डिजीज के कारण पम्पिंग कैपेसिटी 35% या उससे कम रहती हो, जिनमें पहले कभी एक बार भी सडन कार्डियक अरेस्ट का एक दौर पड़ चुका हो या जिनकी फैमिली में इस तरह की कोई मृत्यु हो चुकी हो ऐसे सभी व्यक्तियों को अपने कार्डियोलॉजिस्ट से मिलकर अपना पूरा हार्ट का चेकअप करवाना चाइये। ECG, एकोकार्डियोग्राफी, स्ट्रेस टेस्ट, हॉल्टर टेस्ट, हार्ट की MRI आदि कुछ जांचों के माध्यम से हम इन संभावित मृत्यु के कारणों को जांचकर समय रहते इनसे जान बचाई जा सकती है।

उपचार:

ऐसे सभी संभावित मरीजों में जिनमें सडन कार्डियक अरेस्ट की रिस्क काफी ज्यादा हो उनमें एक खास किस्म की मशीन जिसे AICD ऑटोमेटेड इम्प्लांटेबल कार्डियोवर्टर डीफ़िब्रीलेटर कहते हैं। ये एक किस्म का पेसमेकर होता है जो कि हार्ट की अनियंत्रित एवम अनियमित धड़कनों के लिए नियमित रूप से सभी धड़कनों को जांचता है एवं जब भी

सडन कार्डियक अरेस्ट की अवस्था आती है। तब ये तुरंत इलेक्ट्रिकल शॉक देकर हार्ट की धड़कन को नियमित कर देता है। जिससे अचानक मृत्यु को रोक दिया जाता है।

ये एक किस्म का कंप्यूटर होता है जिसमें हार्ट की धड़कनों का पूरा डेटा होता है साथ ही धड़कनों की गड़बड़ी के सभी दोरे रिकॉर्ड हो जाते हैं। जिससे कार्डियोलॉजिस्ट बाद में उसे देखकर आवश्यक दवाओं का उलयोग करके उचित इलाज करते हैं। इस



के अलावा हार्ट की इलेक्ट्रिकल सर्किट की जांच जिसे इलेक्ट्रो फिजियोलॉजिकल स्टडी कहते हैं। उससे हार्ट की एबनॉर्मल इलेक्ट्रिकल सर्किट को जांच करके उसे रेडियो फ्रीक्वेंसी अबलेशन से ठीक किया जाता है।

जानिये क्या हैं सोलह सुख

- विभा अतुल, लखनऊ

1. पहला सुख निरोगी काया।
2. दूजा सुख घर में हो माया।
3. तीजा सुख कुलवंती नारी।
4. चौथा सुख सुत आज्ञाकारी।
5. पाँचवा सुख सदन हो अपना।
6. छट्ठा सुख सिर कोई ऋण ना।
7. सातवाँ सुख चले व्यापारा।
8. आठवाँ सुख हो सबका प्यारा।
9. नौवाँ सुख भाई और बहन हो।
10. दसवाँ सुख न बैरी स्वजन हो।
11. ग्यारहवाँ मित्र हितैषी सच्चा।

12. बारहवाँ सुख पड़ोसी अच्छा।
 13. तेरहवाँ सुख उत्तम हो शिक्षा।
 14. चौदहवाँ सुख सद्गुरु से दीक्षा।
 15. पंद्रहवाँ सुख हो साधु समागम।
 16. सोलहवाँ सुख संतोष बसे मन।
- सोलह सुख ये होते भाविक जन।
जो पावें सोइ धन्य हो जीवन।।

हालांकि आज के समय में ये सभी सुख हर किसी को मिलना मुश्किल है। लेकिन इनमें से जितने भी सुख मिलें उससे खुश रहने की कोशिश करनी चाहिए।

हरद्वार की महिमा

- सुरेंद्र चतुर्वेदी, इंदौर

हरद्वार जिसे हरिद्वार के नाम से भी जाना जाता है। इसकी महिमा अनन्त है। जिसे शास्त्रों अथवा पुराणों में बहुत गाया और बताया गया है, लेकिन ये महिमा क्यों है? इसके कारण क्या है ?

1. हरद्वार को सर्वप्रथम हर का द्वार कहा जाता है क्योंकि हरद्वार अर्थात हर (देवों के देव महादेवजी) के कैलाश से जुड़ी पर्वत श्रृंखलाओं के पर्वत हरद्वार से शुरू होते हैं जो हर (देवाधिदेव महादेव) के द्वार कैलाश तक जाते हैं और हरद्वार महादेवजी का अत्यंत प्रिय स्थान भी है इसी कारण से भी इसे हर का द्वार कहा जाता है। द्वार हर तक जाने का।

2. हरिद्वार वह स्थान है जो संसार में दूसरे स्थान पर बसा था अर्थात पृथ्वी पर सर्वप्रथम काशी मुक्तिकेन्द्र अर्थात आनंदवन की रचना हुई थी। जिसे भगवान सदाशिव ने अपने शिवलोक में त्रिशूल से रचकर धरती पर स्थापित किया जो मुक्ति देने वाली काशी के नाम से त्रिलोक विख्यात है। उसके बाद ब्रह्मा जी ने अपने पुत्र दक्षप्रजापति को राज्य करने के लिए धरती पर जो स्थान प्रदान किया वो हरिद्वार ही था। यहीं पर राजा दक्ष ने अपनी नगरी बसाई थी और यहीं पर वो राज्य करते थे। यही दक्षपुरी के नाम से पुराणों में वर्णित स्थान है। ये संसार में बसा दूसरा नगर था। पहला काशी दूसरा हरिद्वार इसलिए भी इसकी महिमा है।

3. हरिद्वार में कुम्भ से छलका अमृत गिरा था। जिसे स्वर्भानु नामक दैत्य लेकर भाग रहा था, जो बाद में विष्णु भगवान के द्वारा सर विच्छेद के कारण राहु केतु के रूप में जाना गया और नवग्रहों में स्थापित हुआ। अमृत छलककर गिरने के कारण भी हरिद्वार की महिमा बढ़ी और ये कुंभनगरी बना जहाँ 12 वर्ष बाद कुम्भ होने लगा।

4. पुराणों और शोध में मिले तथ्यों से स्पष्ट हुआ है कि धरती पर सर्वप्रथम भगवान विष्णु के चरण जिस स्थान पर पड़े वो हरिद्वार ही था बाद में हरिद्वार के मायापुरी क्षेत्र में ही भगवान विष्णु और माता महालक्ष्मी का विवाह संपन्न हुआ था। इन्ही दोनों कारणों से ये स्थान भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी को अत्यंत प्रिय हुआ और इसे भगवान हरि ने अपने नाम से सम्बोधित करके हरिद्वार बनाया। तबसे इसके दो नाम पड़े हर का द्वार यानी हरद्वार और हरि का भी द्वार अर्थात हरिद्वार संसार का पहला क्षेत्र जो हर और हरि दोनों को अतिप्रिय है और दोनों के नाम से जाना जाता है।

5. राजा दक्ष ने परमेश्वरी माता आदिशक्ति की तपस्या करके उनसे पुत्री रूप में अपने घर जन्म लेने का वर मांगा था, तो माँ उसके घर पैदा हुई राजा दक्ष की पुत्री सती के रूप में आदिशक्ति स्वरूपा भगवती माता सती का जन्म इसी हरिद्वार में हुआ था। यही उनका बालपन और युवा अवस्था गुजरी यहीं पर उन्होंने तप करके महादेवजी को पति रूप में प्राप्त किया। तब भगवान महादेवजी ब्रह्माजी, विष्णुजी, इंद्र, सूर्य, चन्द्र आदि देवों और लक्ष्मी, सरस्वती, इंद्राणी, गायत्री आदि देवियों और ऋषि मुनियों तथा अपने गणों सहित बारात लेकर यहाँ पर आए थे और माता सती से विवाह किया था इस कारण से भी हरिद्वार की महानता बढ़ती है

6. राजा दक्ष ने विश्व विख्यात जो यज्ञ किया था वो भी हरिद्वार के कनखल क्षेत्र में ही किया था जहाँ राजा दक्ष का महल था।

7. गंगोत्री जहाँ से गंगाजी का उद्गम है। उसका रास्ता भी हरिद्वार से होकर ही जाता है। गंगाजी हरिद्वार से होकर ही अन्य स्थानों पर जाती है, इसीलिये इसकी महिमा माँ गंगा की कृपा से और भी बढ़ गयी है।

8. चार धाम गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ तक जाने से पूर्व हरिद्वार में पूजन करना अनिवार्य है, जो देव आज्ञा है शास्त्रों अथवा पुराणों में क्योंकि चारधाम तक जाने का मार्ग भी हरिद्वार से होकर ही जाता है।

9. महादेवजी की पुत्री माता मनसा जो वासुकि नागों के राजा की बहन थी। उनका निवास स्थान भी हरिद्वार में ही है, जो माँ मनसा देवी के नाम से विख्यात है जहाँ हजारों भक्तगण हर दिन माँ के दर्शन करने दूर दूर से आते हैं मन की कामना पूरी करने के कारण माँ को मनसा देवी कहा जाता है।

10. रामायणकाल में अहिरावण और महिरावण श्रीराम को जब पाताल में देवी के सामने बलि देने के लिए ले गए थे तो महादेवजी के अवतार हनुमानजी ने देवी से श्रीराम की बलि टालने का आग्रह किया था। तब देवी ने हनुमानजी से कहा था मैं इस पातालपुरी को त्यागकर शिवपुरी अर्थात हरिद्वार की पर्वत श्रृंखला पर जा रही हूँ। तुम इन दोनों असुरों की बलि मुझे दो जिससे मुझे प्रसन्नता होगी और पाताल में धर्म स्थापना होगी। तब जो देवी पाताल से उठकर हरिद्वार के पर्वतों पर विराजी वो माँ चंडीदेवी के नाम से विश्व विख्यात है। रामायणकाल में रावण को जीतने और अयोध्या आने

चतुर्वेदी चन्द्रिका

के बाद श्रीराम ने सीताजी लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और हनुमानजी महाराज सहित यहां आकर माता के दर्शन किये थे और माँ चंडीदेवी का आशीर्वाद लिया था।

11. माता सती ने जब दक्ष यज्ञ में अपने देह को यज्ञकुंड में जला दिया था। तब महादेवजी जब उनका देह लेकर बहुत समय तक जब पृथ्वी भ्रमण करते रहे और उन्होंने संसार को भुला दिया। तब विष्णुजी ने अपने कांता नामक चक्र से सती माता के शरीर को 52 भागों में विच्छेद किया था। जिन में से माता सती का हृदय हरिद्वार में गिरा था और मायादेवी के नाम से विख्यात हुआ। ये मायादेवी हरिद्वार के निवासियों की कुल देवी बनी और हरिद्वार की महिमा और बढ़ गई।

12. ऋषि मुनियों अवतारों तथा देवी देवताओं की अतिप्रिय स्थली होने के कारण ही इसे देवभूमि हरिद्वार भी कहते हैं।

13. जिस पहाड़ की चोटी पर बैठकर महादेवजी ने दक्ष यज्ञ

विध्वंस हेतु वीरभद्र, देवी महाकाली, भैरव, क्षेत्रपाल, नंदी, नवदुर्गा आदि सेना का नेतृत्व किया था। वो पहाड़ की चोटी भी हरिद्वार में ही है, जो नीलपर्वत के नाम से जानी जाती है।

14. हरिद्वार संसार का एक मात्र स्थान है, जो भगवान महादेव आदि शक्ति माता, भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी इन चारों को अतिप्रिय है, इसीलिए यहां पर पूरे वर्ष हर हरि और माँ के भक्तों का आवागमन लगा रहता है। श्रद्धालु दूर दूर से इस दिव्य स्थान पर दर्शन हेतु आते हैं।

15. भीम ने अपने गौड़े तक जल भरकर जिस स्थान पर तप किया था, वो भीमगौड़ा कहलाया जो हरिद्वार में ही है। और भी बहुत कुछ महिमा है हरिद्वार की जो यहाँ कह पाना असंभव है, लेकिन हरिद्वार की महिमा अनन्त है जो सतयुग से महाभारत काल तक कि अनेक कथाएं और चमत्कार से भरी हुई है।

सम्पादक के नाम पत्र

सभी को सादर प्रणाम,

आप सभी जानते हैं कि अपनी श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा जिसने राष्ट्रीय एवम् अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस वर्ष अपने 100 साल पूर्ण किए हैं। इसके अंतर्गत आने वाले समय में पुनः नए सभापति एवम् कार्यकारिणी का चुनाव संपन्न होना तय है। एक सुझाव आप सभी के मध्य रखना चाहती हूँ कि 100 साल के कार्यकाल में अभी तक अध्यक्ष पद पर कभी भी कोई महिला प्रत्याशी के रूप में नहीं आई है, चूंकि महासभा के 100 वर्ष से अधिक के कार्यकाल में अब समय आ गया है कि हमारे समाज की किसी महिला साथी को सभापति पद के चुनाव में अपनी भागीदारी अवश्य सुनिश्चित करनी चाहिए।

इस क्रम में समाज की वरिष्ठ समाजसेवी, प्रबुद्ध महिला साथियों से निवेदन है कि वरिष्ठ, अनुभवी, योग्य, समाजसेवी महिला साथी के लिए अधिकाधिक संख्या में सदस्य बने तथा सदस्य बनने के लिये दूसरे महिला साथियों को प्रेरित करें। जिससे समाज में महिलाओं को प्राप्त सम्मान को उच्चतम स्तर पर पहुँचाया जा सके और महासभा के इतिहास में महिला वर्ष में एक नया कीर्तिमान रचाया जा सके, तो क्यों न इस बार कोई महिला उम्मीदवार सभापति पद को सुशोभित करें जिससे हम सब अपने आपको गौरवान्वित महसूस करें।

- पूनम चतुर्वेदी (होलीपुरा/लखनऊ)

000

चतुर्वेदी होने का मुझे गर्व है। पर आज के माहौल को देख-सुनकर बहुत दुःख होता है। बड़े खेद के साथ अपनी मन की बात आप सबके सामने प्रस्तुत कर रही हूँ। ये बताते हुए शर्म महसूस हो रही है कि चतुर्वेदी अपनी मर्यादा और संस्कार भूल चुके हैं। खान पान, रहन सहन, बोल चाल, गरिमा सब खत्म हो रही है।

समस्या सब बताते हैं पर समाधान कोई नहीं बताता, इसलिए आपसे निवेदन है कि महासभा की परिपाटी में थोड़ा परिवर्तन किया जाय। समाज से निवेदन है कि महासभा के 100 वर्ष के इतिहास में इस बार किसी महिला को महासभा की अध्यक्ष बनाया जाय। जिस प्रकार एक परिवार में एक माँ अपने बच्चों को संस्कार देकर परिवार का मान रखती है। उसी प्रकार समाज में जो समस्या आ रही है उसका निवारण एक शासक महिला ही कर सकती है। ऐसा मेरा मत है। आशा है मेरे सुझाव पर आप विचार करेंगे। धन्यवाद

- पूजा अमित चतुर्वेदी, मुम्बई

जामुन

- प्रीति चतुर्वेदी, सिवनी

जामुन फल कार्बोहाइड्रेट को ऊर्जा में बदलने में सहायता करता है और रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करता है। जामुन का ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होने के कारण मधुमेह के रोगियों को गर्मियों में जामुन का सेवन करना चाहिए। यह मधुमेह के लक्षणों जैसे अत्यधिक पेशाब या निस्तारण में कार्य करता है।

जामुन गर्मियों में खाए जाने वाला एक स्वादिष्ट फल है। ये मई और जुलाई के मौसम में मिलता है। जामुन अपने मीठे स्वाद के साथ-साथ कई औषधीय गुणों से भरपूर है। इसे ब्लैक प्लम या जावा प्लम के नाम से भी जाना जाता है। जामुन खाने के अनगिनत स्वास्थ्य लाभ होते हैं। ये पेट दर्द, डायबिटीज, गठिया, पेचिस, पाचन संबंधी कई अन्य समस्याओं को ठीक करने में भी फायदेमंद है।

खून की कमी को पूरा करता है- विटामिन सी और आयरन से भरपूर जामुन शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा को बढ़ाता है। शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ने ऑक्सीजन के वहन की क्षमता बढ़ जाती है। इससे शरीर में खून की कमी पूरी होती है, और आप स्वस्थ रहते हैं। जामुन में मौजूद आयरन खून को शुद्ध करने में मदद करता है।

त्वचा की समस्या दूर करे- जामुन में एंटीऑक्सीडेंट गुण होता है, जो त्वचा को स्वस्थ रखने में मदद करता है। इसके सेवन से त्वचा पर होने वाली कील-मुँहासों की समस्या कम हो जाती है। अगर आपकी त्वचा तैलीय है, तो जामुन का सेवन जरूर करें। इससे त्वचा फ्रेश बनी रहेगी। जामुन स्किन समस्याओं को दूर करके इसे साफ रखने में मदद करता है।

मोटापा कम करे- जामुन में फाइबर की भरपूर मात्रा होती है और कैलोरी बहुत ही कम होती है। इसमें विटामिन सी, आयरन, फास्फोरस, मैग्नीशियम और फोलिक एसिड भी पाया जाता है। ये शरीर को स्वस्थ रखने में मदद करता है। इसके सेवन से पेट लंबे समय तक भरा हुआ रहता है। जिससे आपको बार-बार भूख का एहसास नहीं होता है। इसका नियमित सेवन बढ़ते हुए वजन को कम करने में मदद करता है।

दांतों और मसूड़ों के लिए फायदेमंद- जामुन, मसूड़ों और दांतों के लिए फायदेमंद होता है। जामुन की पत्तियों में एंटी बैक्टीरियल गुण होते हैं। इसका सेवन मसूड़ों से निकलने वाले खून को रोकने में और संक्रमण को फैलने से रोकता है। जामुन

की पत्तियों को सुखाकर टूथ पाउडर के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। इसमें एंटीजेंट गुण होते हैं जो मुँह के छालों को ठीक करने में मदद करते हैं। इसके अलावा, मुँह के छालों में जामुन की छाल के काढ़ा का इस्तेमाल करने से फायदा मिलता है।

दिल के लिए फायदेमंद- पोटेशियम से भरपूर जामुन, दिल के लिए बेहद फायदेमंद होता है। प्रति 100 ग्राम जामुन में लगभग 55 मिलीग्राम पोटेशियम मौजूद होता है। हाई ब्लड प्रेशर, दिल से जुड़ी बीमारी और हार्ट स्ट्रोक जैसी समस्याओं के खतरे को दूर रखने में ये फल फायदेमंद होता है। जामुन धमनियों को स्वस्थ रखता है और उसे सख्त होने से रोकता है।

इंफेक्शन को रोकता है- जामुन में एंटी बैक्टीरियल, एंटी इंफेक्टिव और एंटी मलेरियल गुण होते हैं। जामुन में मैलिक एसिड, टैनिन, गैलिक एसिड, ऑक्सैलिक एसिड और बेट्यूलिक एसिड भी होते हैं। इसके सेवन से शरीर कॉमन इंफेक्शन से दूर रहता है।

डायबिटीज में लाभकारी- जामुन डायबिटीज में कारगर फल माना जाता है। ये बार-बार पेशाब आने की समस्या और अधिक प्यास लगने वाले डायबिटीज के लक्षणों को ठीक करने में मदद करता है। इसमें लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है, जो ब्लड शुगर लेवल को सामान्य रखता है। जामुन के पेड़ की छाल और पत्तियां डायबिटीज के इलाज के लिए उपयोग की जाती हैं।

आंखों के लिए लाभकारी- जामुन हीमोग्लोबिन के लेवल में सुधार करता है और इसमें मौजूद आयरन रक्त को शुद्ध करने वाले एंजेंट के रूप में कार्य करता है। ये त्वचा के लिए फायदेमंद होने के साथ-साथ आंखों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है। जामुन में कई तरह के मिनरल, विटामिन सी और ए भी पाए जाते हैं।

मधुमेह रोगी इसके फल और पत्तियों से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। फल कार्बोहाइड्रेट को ऊर्जा में बदलने में सहायता करता है और रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करता है। जामुन का ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होने के कारण मधुमेह के रोगियों को गर्मियों में जामुन का सेवन करना चाहिए। यह मधुमेह के लक्षणों जैसे अत्यधिक पेशाब या धक्का देने से कम करता है। पत्तियों, बीजों और छाल का अर्क मधुमेह के इलाज में बहुत सफल होता है। इंटरमीडिएट हाइपरग्लेसेमिया (प्रीडायबिटीज) एक चयापचय रोग है जिसमें रक्त शर्करा का स्तर सामान्य से थोड़ा अधिक बढ़

चतुर्वेदी चन्द्रिका

जाता है लेकिन मधुमेह की दहलीज तक नहीं बढ़ता है। इसे विभिन्न प्रकार की सूक्ष्म और स्थूल-संवहनी समस्याओं से जोड़ा गया है। एंटीहाइपरलिपिडेमिक गुणों वाली कई यूनानी दवाएं हैं, और उनमें से एक है जामुन। यह आयरन और एस्कॉर्बिक एसिड का एक उपयुक्त स्रोत है, और यहां तक कि यह हृदय और यकृत की समस्याओं में भी मदद कर सकता है। भारत में जामुन के सूखे और पाउडर बीज का उपयोग अक्सर मधुमेह के प्रबंधन के लिए किया जाता है। सालों से, जामुन के बीज के पाउडर का उपयोग स्वस्थ रक्त शर्करा के स्तर को बनाए रखने के साथ-साथ हृदय और जठरांत्र संबंधी समस्याओं के इलाज के लिए एक प्राकृतिक तरीके के रूप में किया जाता रहा है। जामुन सबसे खराब होने वाले छोटे फलों में से एक है, फिर भी यह सबसे पौष्टिक भी है। यह ज्यादातर दवा उद्योग में कार्यरत है, खासकर मधुमेह रोगियों द्वारा। इसमें कई एंथोसायनिन होते हैं, जिनमें एंटी-एनाल्जेसिक गुण होते हैं।

साइजीगियम क्यूमिनी, जिसे जामुन या ब्लैक प्लम भी कहा जाता है, फ्लेवोनोइड्स, पॉलीफेनोल, एंटीऑक्सिडेंट, आयरन और विटामिन सी जैसे बायोएक्टिव घटकों का एक उत्कृष्ट स्रोत है।

जामुन का पेड़ एक उष्णकटिबंधीय सदाबहार खिलने वाला पौधा है और मायर्टेसी परिवार का एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है। भारतीय और दुनिया भर में अन्य पारंपरिक दवाओं में लंबे समय से इसका इस्तेमाल किया जाता रहा है। जामुन की खेती मुख्य रूप से एशियाई देशों जैसे पाकिस्तान, भारत, श्रीलंका और बांग्लादेश में की जाती है। प्राचीन चिकित्सा के बाद से, इसका उपयोग विभिन्न प्रकार की बीमारियों और शारीरिक स्थितियों के इलाज के लिए किया जाता रहा है। वर्तमान में, यह ज्यादातर मधुमेह, हाइपरलिपिडेमिया, उच्च रक्तचाप, मोटापा आदि सहित विभिन्न चयापचय संबंधी मुद्दों के इलाज के लिए एक दवा के रूप में उपयोग किया जाता है। इसलिए, जामुन चयापचय सिंड्रोम (एमएस) के खिलाफ लाभकारी भूमिका निभा सकता है। इस काम में, जामुन पर नवीनतम उपलब्ध वैज्ञानिक साहित्य एकत्र किया गया था और मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा और हाइपरलिपिडेमिया पर इसके प्रभाव की जांच करने वाले नैदानिक परीक्षणों का विश्लेषण किया गया था ताकि यह पता लगाया जा सके कि जामुन एमएस के लक्षणों और बायोमार्कर में कैसे सुधार कर सकता है। कुल मिलाकर, इस अध्ययन के परिणामों में एमएस के इन बायोमार्करों की रोकथाम और उपचार के साथ जामुन का एक महत्वपूर्ण सहयोग पाया गया। कई अध्ययनों में, जामुन ने न केवल एमएस में बल्कि कई अन्य बीमारियों में भी औषधीय संशोधन दिखाए। वर्तमान में, एमएस के रोगियों के इलाज के लिए लोक औषधि के रूप में इसका उपयोग व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। इसलिए, बड़ी संख्या में नैदानिक

अध्ययनों के निष्कर्षों ने इसके एंटीऑक्सीडेशन, एंटीडायबिटिक, एंटी-इंफ्लेमेशन एंटीकार्सिनोजेनिक और हाइपरलिपिडेमिक प्रभावों के कारण एमएस के खिलाफ जामुन के बेहतर प्रभावों की पुष्टि की। दूध और डेयरी उत्पादों के साथ जामुन को खाली पेट खाने से बचें। इन मामलों में इससे एसिडिटी हो सकती है। क्योंकि जामुन का स्वाद हल्का खट्टा होता है। इसे खाली पेट या दूध पीने के तुरंत बाद नहीं खाना चाहिए, क्योंकि इससे एसिडिटी हो सकती है। जामुन खाने के बाद दूध पीने से बचें। जामुन में विटामिन सी और खट्टा स्वाद होता है, इसे दूध के साथ खाने से एसिडिटी बढ़ सकती है।

जामुन में फाइबर की मात्रा अधिक होती है और यह यूरिक एसिड के लिए अच्छा होता है। जामुन खाने से आपके रक्त में यूरिक एसिड के स्तर को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है।

जामुन आपकी किडनी के लिए अच्छे होते हैं और किडनी स्टोन को दूर करने में मदद करते हैं। किडनी की बीमारी और किडनी स्टोन से बचाव के लिए आप जामुन खा सकते हैं। जामुन वजन घटाने में मदद करता है बल्कि जामुन में मध्यम संख्या में कैलोरी होती है, लगभग 75 कैलोरी प्रति कप, और वसा की अनुपस्थिति के कारण वजन घटाने वाले आहार के लिए उपयुक्त है। जामुन पाचन में भी सहायता करता है, जो वजन घटाने के लिए आवश्यक है।

जामुन गर्मियों में खाए जाने वाला एक स्वादिष्ट फल है। ये मई और जून के मौसम में मिलता है। जामुन अपने मीठे स्वाद के साथ-साथ कई औषधीय गुणों से भरपूर है। इसे ब्लैक प्लम या जावा प्लम के नाम से भी जाना जाता है। जामुन खाने के अनगिनत स्वास्थ्य लाभ होते हैं। ये पेट दर्द, डायबिटीज, गठिया, पेचिस, पाचन संबंधी कई अन्य समस्याओं को ठीक करने में भी फायदेमंद है। इसे विभिन्न घरेलू नामों जैसे जामुन, राजमन, काला जामुन, जमाली, ब्लैकबेरी आदि के नाम से जाना जाता है। प्रकृति में यह अम्लीय और कसैला होता है और स्वाद में मीठा होता है। अम्लीय प्रकृति के कारण सामान्यतः इसे नमक के साथ खाया जाता है। जामुन का फल 70 प्रतिशत खाने योग्य होता है।

हीमोग्लोबिन काउंट में सुधार करता है जामुन में विटामिन सी और आयरन भरपूर मात्रा में होता है। ...

डाइबिटीज रोकने में सहायक जामुन के फायदे डाइबिटीज में बहुत होते हैं। ...

दिल को स्वस्थ रखता है ...

त्वचा को रखता है स्वस्थ ...

वजन घटाने में सहायक ...

गैस्ट्रिक स्वास्थ्य में सुधार ...

ओरल हेल्थ में सहायक ...

संक्रमण को रोकता है।

ऑक्सीजन- प्राणवर्धक या प्राणहर्ता वायु

- अनुराग चतुर्वेदी, गाजियाबाद

स्वयं को समझने की सबसे सरल परिभाषा जो आज प्रयोग में लायी जाती है, वह है, तन मन और धन का संयोग अर्थात स्वयं = तन + मन + धन

लेकिन आज की विषम परिस्थितियों में इन तीनों का सही संयोजन बना पाना बहुत मुश्किल है, क्योंकि तीनों हिस्से एक दुसरे से जुड़े हैं। एक अच्छे तन में ही अच्छा मन निवासित हो पाता है, वहीं एक अच्छे मन के अंदर ही धनोपार्जन की क्षमता होती है। एक का सन्तुलन बिगड़ा नहीं कि दूसरा धराशायी।

तन के बहुतायत प्रकार होते हुए भी, अगर हम सिर्फ स्थूल तन की ही चर्चा करें, तो पाएंगे कि स्थूल शरीर में सबसे महत्वपूर्ण हमारे प्राण हैं जो निकले नहीं की हम श्री कुमार से एक बॉडी में परिवर्तित हो जाते हैं और जब प्राण रहे तो हम नदियाँ और समुंदर ही नहीं आकाश के मस्तक पर भी लहरा पाते हैं।

अब अगर हम शरीर के सबसे प्रमुख भाग अर्थात प्राणों की चर्चा करें तो पाएंगे कि हमारा आधुनिक ध्यान सिखाता है कि, प्राण और कुछ नहीं बल्कि आक्सीजन है, जो आप अपने नथुनों से ग्रहण करते हैं और आपको ऑक्सीजन ना मिले तो आपका प्राणांत हो जाएगा।

ऋग्वेद का सबसे रहस्यमयी सिद्धांत “विपरीतता का सिद्धांत”, हमें सिखाता है कि सत्य के ज्ञान के लिए असत्य का ज्ञान होना अति आवश्यक होता है। नमक के स्वाद के बिना मीठे स्वाद का ज्ञान भ्रम मात्र है स्वर्ग की प्राप्ति के लिए नरक से बचने का मार्ग और अन्धकार का, प्रकाश प्राप्ति के लिए महत्व (आधुनिक विज्ञान ये सिद्ध कर चुका है कि अंधकार और कुछ नहीं बल्कि प्रकाश की अधिकता भर है); ये सारे उदाहरण तो मात्र २-४ संख्या में हैं, लेकिन क्या आपने सोचा है कि प्राणों की चर्चा में इस सिद्धांत की क्या भूमिका है?

दरअसल प्राण ऑक्सिजन नहीं है बल्कि ऑक्सिजन तो सिर्फ एक माध्यम मात्र है प्राणों को धकेलकर सारे शरीर में संचालित करने का। प्राण हमारे शरीर में ७२००० नादियों के माध्यम से प्रवाहित होते हैं तथा वो किसी माइक्रोस्कोप से कोई डॉक्टर नहीं देख सकता है तो आधुनिक विज्ञान ने बिना झिझक के ऑक्सिजन को प्राणों की संज्ञा दे दी और देखा देखी में हम भारतीय भी भ्रमित हो गए इस ऑक्सिजन की अविध्या में।

प्राणों के बारे में हम आगे समझे उस से पहले ऑक्सिजन के

मानव शरीर के असर की अगर आप पड़ताल करना चाहे तो गूगल जैसे किसी भी सर्च इंजन पर बस “ऑक्सीडेशन प्रोसेस इम्पैक्ट ऑन ह्यूमन बॉडी” डालियेगा, प्राप्त रिजल्ट्स आपको चौंका सकते हैं क्योंकि मानव शरीर के क्षय का प्रमुख कारण ऑक्सीडेशन है। ये ही शरीर का क्षय आपके स्थूल शरीर के नष्ट होने या मृत्यु का कारण होता है। ऑक्सिजन ही मानव शरीर में ऑक्सीडेशन की प्रक्रिया करता है। जब मनुष्य साँसों के माध्यम से कथित जीवनदायिनी ऑक्सिजन को ग्रहण करते हैं।

अब तक की जानकारी सिर्फ आधी है, आप विचलित न हों क्योंकि हमारे ऋषि मुनियों ने इस शरीर के विज्ञान को करोड़ों साल पहले समझ लिया था और आदियोगी भगवान् शंकर ने पार्वती को दिए उपदेशों में जो “शिव संहिता” के रूप में उपलब्ध हैं। बताया कि तंत्र अर्थात तन का विज्ञान और वो कहते हैं की ऑक्सिजन को आप सिर्फ प्राणों को धक्का देने के उद्देश्य से ग्रहण करें लेकिन ऑक्सिजन ग्रहण करने के बाद आप उस ऑक्सिजन के दबाव से प्राणों को सारे शरीर में संचालित करें। फिर ऑक्सिजन को शरीर से बाहर छोड़ दें। इस प्रक्रिया को पूरक (साँस अन्दर लेना), कुम्भक (साँस रोकना) तथा रेषक (साँस बाहर छोड़ना), यानी तीन हिस्सों में बांटा गया। ध्यान देने योग्य है ये चक्र १०-२०-१० सेकंड्स में संचालित करने का पयत्न करें। प्राणों के सही संचालन से शारीरिक रोग व्याधियां दूर होती हैं और शरीर स्वस्थ होता है।

हमारे ऋषि मुनि कुम्भक का अभ्यास करते हेतु, दो साँसों के बीच की समय सीमा को बढ़ाते जाते थे और ऑक्सिजन को ग्रहण करने की आवश्यकता पर चतुरता से नियंत्रण प्राप्त कर लेते थे और अपनी इच्छानुसार शरीर का त्याग करते थे। कछुआ दो साँसों के बीच लगभग ४ मिनट का अंतराल रखता है और लगभग ४०० वर्ष की आयु प्राप्त करता है, हाथी लगभग १ मिनट का अंतराल रखता है और लगभग १०० वर्ष की आयु प्राप्त करता है वहीं एक श्वान अपनी लम्बी जीभ निकालकर तीव्रता से साँस लेता है और ७-१० वर्ष की आयु को प्राप्त करता है।

आवश्यकता है आज फिर से अपनी भूली बिसरी वैदिक परम्पराओं के उत्थान की ओर ये तभी संभव है जब आप और हम दोनों मिलकर अपनी अगली पीढ़ी को इस अनमोल वैदिक परम्परा से अवगत कराये जिस से वो जान सके आधुनिक विज्ञान वैदिक ज्ञान के पासंग भी नहीं है।

रमणरेती माहात्मयः

- कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज

अथ ते कथयिष्यामि यदृषीणां परायणम्।

रमणस्थल महात्मयं सर्वाभीष्ट प्रदायकम्॥

श्री कृष्ण की प्राकट्य - स्थली ब्रज वसुंधरा में सकल - कलुष-विध्वंसिनी, कलिन्द गिरी नंदिनी श्रीहरिपद प्रेमाभूत प्रदायिनी, श्री कृष्ण -चतुर्थ प्रिया के मनोहारी वाम कूल के निकुंज में, वृन्दावन के पास मथुरा के निकट में महावन के बगल में रमणरेती धाम है।

गोलोके हरिणाज्ञाप्ता कालिंदी सरितां वरा, कृष्णं प्रदक्षिणीकृत्य प्राप्ताम्द ब्रजमण्डले।

वृन्दावन समीपे च मथुरा निकटे शुभे, श्रीमहावन पाश्वे च सैकते रमणस्थले॥

यहां प्रभु सदैव वात्सल्य भाव के भक्तों को अपनी वाल क्रीड़ा से आनंद प्रदान करते हैं। सख्यभाव के उपासकों को ग्वारिया के वेश में गायों के पीछे पीछे गोप सखा मंडल में खेलते खेलते दर्शन देते हैं। माधुर्य भाव के रसिक आराधकों को नित्य अभिन्न स्वरूपा, पाणेश्वरी, ब्रजेश्वरी राधा रानी के साथ दर्शन -सुख प्रदान करते हैं।

पलकिन ते जैसे अधिक, पुतरिनु सों अति प्यार॥

ऐसे लाड़िलि लाल के, छिन -छिन चरन संभार॥

गोपकुआ से आगे विख्यात रमन क्षेत्र है, नित्य लीला बिहारी गोलोक अधिपति श्री कृष्ण माधव वहां श्री यमुना यूथ को रमण कराते हैं -

तस्याग्रे रमणक्षेत्र, विख्यातं यमुना तटे, गोलोकाधिपतिः कृष्णा नित्य लीला परायणः, तत्र श्री यमुना युथं रमयामास माधवः॥

प्रभु गोलोक ते जब ब्रज पधारे तब सरिताओं में श्रेष्ठ श्री यमुना जी को आज्ञा प्रदान की कि लीला आनंद के लिए ब्रज चलो। आज्ञा पाकर यमुना जी ने अपने यूथ के साथ श्री कृष्ण के रास - रस - वर्धन के लिए ब्रज में आवास किया। ब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा गया है कि परिपूर्णतम कृष्ण बैकुण्ठ में चतुर्भुज एवं गोकुल में द्विभुज रूप में क्रीड़ा करें हैं :-

परिपूर्णतमः कृष्णः वैकुण्ठे गोकुले तथा चतुर्भुजस्त्र वैकुण्ठे, गोकुले द्विभुजः स्वयम्॥

रमणस्थल की महिमा समस्त मनोकामनाओं को पूरा करने वाली है। सभी तीर्थ यहां विराजमान हैं। रमन स्थल की रेती माँ यशोदा जी के वात्सल्य स्नेहाधिक्य से अभिषिक्त होने पर मोती -



मणि जैसी आभायुक्त तथा समस्त सिद्धि व मुक्ति की प्रदायिनी है।

तेषां संकल्प श्राद्धेन मुक्तिः स्याद् रमणस्थले

पूर्ण श्रद्धा से संकल्प पूर्वक अपने पितरों का श्राद्ध रमण स्थल में करने से निश्चय ही उनको मुक्ति प्राप्त होती है और वह पूर्ण तृप्त हो आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

गयायां पिण्डदानेन यत्फलं परिकीर्तितम्।

तत्फलं रमणस्थाने पितृ स्मरणाल्ल भन्नरः॥

पितृ तीर्थ गया में पिंडदान करने से पितरों को जिस फल की प्राप्ति होती है, रमणरेती में केवल पितरों का स्मरण करने से ही वह फल पितरों को प्राप्त हो जाता है। रमणरेती में जिसका शरीर छूटता है। उसे योगियों के लिए भी परम दुर्लभ गोलोकधाम प्राप्त होता है। योगियों, सत्यवादियों एवं धर्मशीलों की जो गति है सा मतीः रमन स्थले।

एक ब्रजरेणुका पै चिंतामणि वाली डारों

अद्भुत है, यह रमणरेती -रमणस्थली बिहार निकुंज- रमण क्षेत्र जो श्री राधा माधव के चरण बिंदुओं की रज से संस्पर्शित होकर नितनूतन यशः सुरभि आधा प्रकीर्ण कर रही है।

रमणरेती लौट्यों नहीं, कियों ना जमुना पान।

रे नर तू जान्यो नहीं, ब्रज को तत्व महान ॥

को कभी वर्णन कर सके, श्री रमणरेती को मूल।

जाके कण-कण में मिली, श्री युगल चरण की धूल॥

तलाक तलाक तलाक

- संकलन विमल चतुर्वेदी, नोयडा

विवाह उपरांत जीवन साथी को छोड़ने के लिए 2 शब्दों का प्रयोग किया जाता है

1-Divorce (अंग्रेजी)

2-तलाक (उर्दू)

कृपया हिन्दी का शब्द बताए...??

कहानी आजतक के Editor... संजय सिन्हा की लिखी है...।

तब मैं... 'जनसत्ता' में... नौकरी करता था...। एक दिन खबर आई कि... एक आदमी ने झगड़े के बाद... अपनी पत्नी की हत्या कर दी...। मैंने खबर में हेडिंग लगाई कि... पति ने अपनी बीवी को मार डाला...! खबर छप गई..., किसी को आपत्ति नहीं थी...। पर शाम को... दफ्तर से घर के लिए निकलते हुए... प्रधान संपादक प्रभाष जोशी जी... सीढ़ी के पास मिल गए...। मैंने उन्हें नमस्कार किया... तो कहने लगे कि... संजय जी..., पति की... 'बीवी' नहीं होती...!

पति की... 'बीवी' नहीं होती? मैं चौंका था बीवी तो... 'शौहर' की होती है..., 'मियाँ' की होती है..., पति की तो... 'पत्नी' होती है...!

भाषा के मामले में... प्रभाष जी के सामने मेरा टिकना मुमकिन नहीं था..., हालांकि मैं कहना चाह रहा था कि... भाव तो साफ है न? बीवी कहें... या पत्नी... या फिर वाइफ..., सब एक ही तो हैं..., लेकिन मेरे कहने से पहले ही... उन्होंने मुझसे कहा कि... भाव अपनी जगह है..., शब्द अपनी जगह...! कुछ शब्द... कुछ जगहों के लिए... बने ही नहीं होते...! ऐसे में शब्दों का घालमेल गड़बड़ी पैदा करता है...।

खैर..., आज मैं भाषा की कक्षा लगाने नहीं आया..., आज मैं रिश्तों के एक अलग अध्याय को जीने के लिए आपके पास आया हूँ...। लेकिन इसके लिए... आपको मेरे साथ... निधि के पास चलना होगा...।

निधि... मेरी दोस्त है..., कल उसने मुझे फोन करके अपने घर बुलाया था...। फोन पर उसकी आवाज से... मेरे मन में खटका हो चुका था कि... कुछ न कुछ गड़बड़ है...! मैं शाम को... उसके घर पहुंचा...। उसने चाय बनाई... और मुझसे बात करने लगी...। पहले तो इधर-उधर की बातें हुई..., फिर उसने कहना शुरू कर

दिया कि... नितिन से उसकी नहीं बन रही और उसने उसे तलाक देने का फैसला कर लिया है...।

मैंने पूछा कि... नितिन कहां है...? तो उसने कहा कि... अभी कहीं गए हैं..., बता कर नहीं गए...। उसने कहा कि... बात-बात पर झगड़ा होता है... और अब ये झगड़ा बहुत बढ़ गया है..., ऐसे में अब एक ही रास्ता बचा है कि... अलग हो जाएं..., तलाक ले लें...!

निधि जब काफी देर बोल चुकी... तो मैंने उससे कहा कि... तुम नितिन को फोन करो... और घर बुलाओ..., कहो कि संजय सिन्हा आए हैं...!

निधि ने कहा कि... उनकी तो बातचीत नहीं होती..., फिर वो फोन कैसे करे...?!!!

अजीब सँकट था...! निधि को मैं... बहुत पहले से जानता हूँ...। मैं जानता हूँ कि... नितिन से शादी करने के लिए... उसने घर में कितना संघर्ष किया था...!

बहुत मुश्किल से... दोनों के घर वाले राजी हुए थे..., फिर धूमधाम से शादी हुई थी...। ढेर सारी रस्म पूरी की गई थी... ऐसा लगता था कि... ये जोड़ी ऊपर से बन कर आई है...! पर शादी के कुछ ही साल बाद... दोनों के बीच झगड़े होने लगे... दोनों एक-दूसरे को खरी-खोटी सुनाने लगे... और आज उसी का नतीजा था कि... संजय सिन्हा... निधि के सामने बैठे थे..., उनके बीच के टूटते रिश्तों को... बचाने के लिए...!

खैर..., निधि ने फोन नहीं किया...। मैंने ही फोन किया... और पूछा कि... तुम कहां हो... मैं तुम्हारे घर पर हूँ..., आ जाओ...। नितिन पहले तो आनाकानी करता रहा..., पर वो जल्दी ही मान गया और घर चला आया...।

अब दोनों के चेहरों पर... तनातनी साफ नज़र आ रही थी...। ऐसा लग रहा था कि... कभी दो जिस्म-एक जान कहे जाने वाले ये पति-पत्नी... आंखों ही आंखों में एक दूसरे की जान ले लेंगे...! दोनों के बीच... कई दिनों से बातचीत नहीं हुई थी...!!

नितिन मेरे सामने बैठा था...। मैंने उससे कहा कि... सुना है कि... तुम निधि से... तलाक लेना चाहते हो...?!!!



चतुर्वेदी चन्द्रिका

उसने कहा, हाँ..., बिल्कुल सही सुना है...। अब हम साथ... नहीं रह सकते...।

मैंने कहा कि... तुम चाहो तो... अलग रह सकते हो..., पर तलाक नहीं ले सकते...!

क्यों...???

क्योंकि तुमने निकाह तो किया ही नहीं है...!

अरे यार..., हमने शादी तो... की है...!

हाँ..., 'शादी' की है...! 'शादी' में... पति-पत्नी के बीच... इस तरह अलग होने का... कोई प्रावधान नहीं है...! अगर तुमने 'मैरिज' की होती तो... तुम डाइवोर्स ले सकते थे...! अगर तुमने 'निकाह' किया होता तो... तुम तलाक ले सकते थे...! लेकिन क्योंकि... तुमने 'शादी' की है..., इसका मतलब ये हुआ कि... हिंदू धर्म और हिंदी में... कहीं भी पति-पत्नी के एक हो जाने के बाद... अलग होने का कोई प्रावधान है ही नहीं...!!!

मैंने इतनी-सी बात... पूरी गंभीरता से कही थी..., पर दोनों हँस पड़े थे...! दोनों को... साथ-साथ हँसते देख कर... मुझे बहुत खुशी हुई थी...। मैंने समझ लिया था कि... रिश्तों पर पड़ी बर्फ... अब पिघलने लगी है...! वो हँसे..., लेकिन मैं गंभीर बना रहा...

मैंने फिर निधि से पूछा कि... ये तुम्हारे कौन हैं...?!!!

निधि ने नज़रे झुका कर कहा कि... पति हैं...! मैंने यही सवाल नितिन से किया कि... ये तुम्हारी कौन हैं...?!!! उसने भी नज़रें इधर-उधर घुमाते हुए कहा कि...बीवी हैं...!

मैंने तुरंत टोका... ये... तुम्हारी बीवी नहीं हैं...! ये... तुम्हारी बीवी इसलिए नहीं हैं... क्योंकि... तुम इनके 'शौहर' नहीं...! तुम इनके 'शौहर' नहीं..., क्योंकि तुमने इनसे साथ निकाह नहीं किया... तुमने शादी की है...! 'शादी' के बाद... ये तुम्हारी 'पत्नी' हुई..., हमारे यहाँ जोड़ी ऊपर से... बन कर आती है...! तुम भले सोचो कि... शादी तुमने की है..., पर ये सत्य नहीं है...! तुम शादी का एलबम निकाल कर लाओ..., मैं सबकुछ... अभी इसी वक्त साबित कर दूंगा...!

बात अलग दिशा में चल पड़ी थी...। मेरे एक-दो बार कहने के बाद... निधि शादी का एलबम निकाल लाई..., अब तक माहौल थोड़ा ठंडा हो चुका था..., एलबम लाते हुए... उसने कहा कि... कॉफी बना कर लाती हूँ...।

मैंने कहा कि..., अभी बैठो..., इन तस्वीरों को देखो...। कई तस्वीरों को देखते हुए... मेरी निगाह एक तस्वीर पर गई..., जहाँ निधि और नितिन शादी के जोड़े में बैठे थे...। और पाँव-पूजन की रस्म चल रही थी...। मैंने वो तस्वीर एलबम से निकाली... और उनसे कहा कि... इस तस्वीर को गौर से देखो...!

उन्होंने तस्वीर देखी... और साथ-साथ पूछ बैठे कि... इसमें खास क्या है...?!!!

मैंने कहा कि... ये पैर पूजन का रस्म है..., तुम दोनों... इन

सभी लोगों से छोटे हो..., जो तुम्हारे पांव छू रहे हैं...।

हां तो...?!!!

ये एक रस्म है... ऐसी रस्म संसार के... किसी धर्म में नहीं होती... जहाँ छोटी के पांव... बड़े छूते हैं...! लेकिन हमारे यहाँ शादी को... ईश्वरीय विधान माना गया है..., इसलिए ऐसा माना जाता है कि... शादी के दिन पति-पत्नी दोनों... 'विष्णु और लक्ष्मी' के रूप हो जाते हैं..., दोनों के भीतर... ईश्वर का निवास हो जाता है...! अब तुम दोनों खुद सोचो कि... क्या हजारों-लाखों साल से... विष्णु और लक्ष्मी कभी अलग हुए हैं...?!!! दोनों के बीच... कभी झिंकझिंक हुई भी हो तो... क्या कभी तुम सोच सकते हो कि... दोनों अलग हो जाएंगे...?!!! नहीं होंगे..., हमारे यहाँ... इस रिश्ते में... ये प्रावधान है ही नहीं...! तलाक शब्द... हमारा नहीं है..., डाइवोर्स शब्द भी हमारा नहीं है...!

यहीं दोनों से मैंने ये भी पूछा कि... बताओ कि... हिंदी में... तलाक को... क्या कहते हैं...???

दोनों मेरी ओर देखने लगे उनके पास कोई जवाब था ही नहीं फिर मैंने ही कहा कि... दरअसल हिंदी में... 'तलाक' का कोई विकल्प ही नहीं है...! हमारे यहाँ तो... ऐसा माना जाता है कि... एक बार एक हो गए तो... कई जन्मों के लिए... एक हो गए तो... प्लीज जो हो ही नहीं सकता..., उसे करने की कोशिश भी मत करो...! या फिर... पहले एक दूसरे से 'निकाह' कर लो..., फिर तलाक ले लेना...!!

अब तक रिश्तों पर जमी बर्फ... काफी पिघल चुकी थी...!

निधि चुपचाप मेरी बातें सुन रही थी...। फिर उसने कहा कि... भैया, मैं कॉफी लेकर आती हूँ...।

वो कॉफी लाने गई..., मैंने नितिन से बातें शुरू कर दीं...। बहुत जल्दी पता चल गया कि... बहुत ही छोटी-छोटी बातें हैं..., बहुत ही छोटी-छोटी इच्छाएं हैं..., जिनकी वजह से झगड़े हो रहे हैं...।

खैर..., कॉफी आई मैंने एक चम्मच चीनी अपने कप में डाली...। नितिन के कप में चीनी डाल ही रहा था कि... निधि ने रोक लिया..., भैया..., इन्हें शुगर है... चीनी नहीं लेंगे...।

लो जी..., घंटा भर पहले ये... इनसे अलग होने की सोच रही थीं...। और अब... इनके स्वास्थ्य की सोच रही हैं...!

मैं हंस पड़ा मुझे हंसते देख निधि थोड़ा झंपी कॉफी पी कर मैंने कहा कि... अब तुम लोग... अगले हफ्ते निकाह कर लो..., फिर तलाक में मैं... तुम दोनों की मदद करूंगा...!

शायद अब दोनों समझ चुके थे...

हिन्दी एक भाषा ही नहीं - संस्कृति है...!

इसी तरह हिन्दू भी धर्म नहीं - सभ्यता है...!!

उपरोक्त लेख मुझे बहुत ही अच्छा लगा..., जो सनातन धर्म और संस्कृति से जुड़ा है...। आप सभी से निवेदन है कि... समय निकाल कर इसे पढ़ें और आगे शेयर जरूर करें

सिद्धहस्त गायक किशोर चतुर्वेदी

- दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ



विगत 19 मार्च 23 को लखनऊ मंडल के होली महोत्सव के मंच पर लोकप्रिय गायक किशोर चतुर्वेदी ओजस्वी प्रस्तुतियां दे रहे थे -----

1. रंग डारोगी मैं नंद जी के गालन पर.....

2. होरी खेलूंगी मैं डट् के, मोरे कान्हा.....

वंस मोर, वंस मोर की आवाजों के साथ ही... तालियों की गड़गड़ाहट.... से हांल गूंज रहा था।

समारोह के विशिष्ट अतिथि चतुर्वेदी चंद्रिका के सम्पादक शशांक जी ने महासभा अध्यक्ष डॉ प्रदीप जी से विचार विमर्श कर चंद्रिका के लिए किशोर जी का साक्षात्कार लेने का आग्रह किया। जब हमने किशोर जी से साक्षात्कार का आग्रह किया तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी, किशोर जी अपनी संगीत साधना को भगवान

हनुमान जी एवं गुरुदेव नीमकरौली बाबा का आशीर्वाद मानते हैं। इसी श्रद्धा से किशोर जी विगत 35 वर्षों से लखनऊ के प्रसिद्ध हनुमान सेतु मंदिर में प्रत्येक रविवार सुबह भजन गायन करते हैं। निरंतर रूप से मंदिर के भजन श्रोता लेखेन्द्र (पुत्तन) जी के माध्यम से किशोर जी ने हमको अपने आवास पर आमंत्रित किया।

ड्राइंग रूम में घुसते ही चारों तरफ अलमारियों में व्यवस्थित एवं सुसज्जित रूप से सहेजें ट्राफी, मंडल एवं सम्मान पत्र उनकी संगीत साधना, लोकप्रियता एवं प्रसिद्धि की कहानी बयां कर रहे थे। किशोर जी से उनके संगीत लगाव के विषय में पूछने पर आपने बताया कि माताजी बताती थी कि रोने पर रेडियो सुनकर मैं चुप हो जाता था, होश सम्हालने पर घर में हारमोनियम पर हाथ साधने का प्रयास करता था, फिर पारिवारिक सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलने से संगीत शौक से साधना में बदल गया।

किशोर जी का जन्म 28 नवंबर 1960 को लखनऊ में हुआ था। आपके पिताजी का नाम कृष्ण कुमार जी (कमतरी) तथा माताजी का नाम उर्मिला जी (सिकन्दरपुर) था। आपके परिवार में चार भाई और तीन बहनें हैं। किशोर जी का लालन-पालन तथा शिक्षा-दीक्षा लखनऊ में ही हुई। FAMILY शब्द की व्याख्या करते हुए किशोर जी ने कहा Father and Mother I love you. अर्थात् जीवन में परिवार के सहयोग से ही सफलता मिलती है। छात्र जीवन में ही पारिवारिक

एवं सामाजिक उत्सवों में आपने गायन प्रस्तुति देना शुरू कर दिया था। अपने भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय से 8 वर्षीय निपुण की डिग्री प्राप्त की है, आपने संगीत साधना एवं दीक्षा के साथ ही लखनऊ विश्वविद्यालय से एम काम की डिग्री भी प्राप्त की। अब तक संगीत ही जीवन बन गया था, दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर



चतुर्वेदी चन्द्रिका



भी कार्यक्रम मिलने लगे थे। फिर भी किशोर जी ने पं धर्मनाथ मिश्रा से तीन साल टुमरी एवं दादरा की दीक्षा ली। आपकी पत्नी रश्मि जी ने भी भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय से विशारद की उपाधि प्राप्त की है, रश्मि जी भी मंच गायन में कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करती है। आपके परिवार में एक पुत्र एवं एक पुत्री है। सन 1983 में संगीत साधना से ही रेलवे में नौकरी मिली। इसके बाद तो संगीत साधना एवं मंच प्रस्तुति ही जीवन चर्या बन गई।

रेलवे समारोह के साथ ही देश के अन्य प्रसिद्ध ताज महोत्सव, बद्री-केदार महोत्सव, वाराणसी महोत्सव, लखनऊ महोत्सव में किशोर जी ने गायन प्रस्तुतियां दी है। आपने देश के विभिन्न क्षेत्रों के साथ ही यूरोप एवं अमेरिका के देशों में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया है। किशोर जी ने अपनी गायकी में विभिन्न विधाओं में महारत हासिल की है, बल्कि गजल, भजन, लोकगीत गायन में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। इन्होंने ख्याति प्राप्त गायिका मुबारक बेगम, गायक गुलाम अली, हरिहरन एवं अनूप जलोटा के साथ भी कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं। आपको उ०प्र० सरकार ने संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया है।

किशोर जी के 'भजन सुगंध', 'भजन-धारा', 'हनुमान चालीसा', 'साईं अनुभूति', 'कहत कबिरा' जैसे कई भजन कैसेट जारी हो चुके हैं। आपने कई टीवी सीरियल ... कहत हनुमान जयश्री राय, जहां चाह वहां राह, पीटल का टुकड़ा, तीन वर्ष, पंख आदि में पार्श्व संगीत के साथ गायन भी किया है। किशोर जी की समस्त उपलब्धियों को सूचीबद्ध करना असंभव है। किशोर जी ने बताया कि जब हम मंच पर होते हैं तो दर्शकों का हक ही सर्वोपरि होता

हैं।

किशोर जी ने बताया कि अब तो संगीत थेरेपी से स्वास्थ्य लाभ के प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे लोगों को स्वास्थ्य लाभ को प्रमाणिकता भी मिलने लगी है, इस थेरेपी से मनुष्य, पशुओं के साथ ही पेड़ पौधे पर भी स्पष्ट प्रभाव एवं लाभ देखा गया है। किशोर जी ने अपनी संगीत साधना की सफलता श्रेय ईश्वर एवं गुरुजनों के आशीर्वाद के साथ ही पारिवारिक एवं सामाजिक प्रोत्साहन को देते हैं।

संगीत साधना के इच्छुक छात्र - छात्राओं के लिए किशोर जी कहते हैं मेहनत, लगन, अनुशासन के साथ ही विधिवत शिक्षा एवं दीक्षा से ही सफलता मिलती है। यदि कभी शार्टकट से सफलता मिल सकती है तो वह शार्ट टर्म के लिए होती है। किशोर जी ने चतुर्वेदी समाज के संगीत साधना के इच्छुक लोगों को सदैव सहयोग करने का आश्वासन दिया है। किशोर जी को उनकी आवभगत के लिए आभार प्रकट करते हुए हम चल दिए।



बांग्लादेश में हिन्दू ऐतिहासिक व राष्ट्रीय मंदिर

- श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

ढाकेश्वरी मंदिर ढाका का सबसे महत्वपूर्ण मंदिर है। इन्हीं ढाकेश्वरी देवी के नाम पर ढाका शहर का नामकरण हुआ है। भारत के विभाजन से पहले तक ढाकेश्वरी देवी मंदिर संपूर्ण भारत के शक्ति पूजक समाज के लिए आस्था का बड़ा केंद्र था। 12वीं शताब्दी में सेन राजवंश के बल्लाल सेन ने ढाकेश्वरी देवी मंदिर का निर्माण कराया था। ढाकेश्वरी पीठ की गिनती शक्तिपीठ में की जाती है क्योंकि यहां सती के आभूषण गिरे थे। ढाका कर्णाट क्षत्रियों की राजधानी रही है। सेन वंश के कर्णाट क्षत्रियों के काल में इस नगर का अभूतपूर्व विकास हुआ। ढाका के लालबाग से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, 800 साल पुराना ढाकेश्वरी मंदिर।

यह बांग्लादेश में हिंदू संस्कृति और आस्था का प्रमुख केंद्र है। विभाजन से पहले यह मंदिर संपूर्ण भारत के प्रमुख मंदिरों में से एक था। लेकिन आज भी न सिर्फ बांग्लादेश में रहने वाले हिन्दुओं, बल्कि समस्त विश्व के हिन्दू समाज के लिए ये आस्था का केंद्र है। 1996 में ढाकेश्वरी मंदिर को बांग्लादेश का राष्ट्रीय मंदिर घोषित किया गया और उसका नाम बदल कर ढाकेश्वरी जातीय मंदिर (राष्ट्रीय मंदिर) रखा गया। ऐसी मान्यता है कि ढाकेश्वरी देवी के नाम पर ही ढाका शहर का नाम पड़ा। ढाकेश्वरी का अर्थ है ढाका की देवी। इन्हें दुर्गा की आदि शक्ति का रूप माना जाता है। इस मंदिर को हिंदू संस्कृति और आस्था का प्रमुख केंद्र तो माना ही जाता है, साथ ही इस मंदिर पर राज्य का स्वामित्व है। हर सुबह प्रमुख मंदिर परिसर में बांग्लादेश का ध्वज फहराया जाता है। यह राष्ट्रीय ध्वज संहिता के नियमों का भी पालन करता है, जैसे राष्ट्रीय शोक दिवस होने पर आधा झुका हुआ होता है। 800 साल पहले निर्मित यह मंदिर कई बार क्षतिग्रस्त हो चुका है। जिस कारण इसकी कई भवन नष्ट हो चुके हैं। 1971 में बांग्लादेश-पाकिस्तान युद्ध के दौरान इस मंदिर को भारी क्षति पहुंची थी और आधे से अधिक भवन नष्ट कर दिए गए थे। मुख्य पूजा हॉल को पाकिस्तानी सेना ने अपने कब्जे में लेकर गोला बारूद के भंडारण के तौर पर प्रयोग किया था। इसके कई साल बाद दंगों के चलते 1989-90 के दौरान मंदिर फिर से क्षतिग्रस्त हुआ। मंदिर का कई बार पुनरुद्धार किया गया। देवी आराधना के



लिए प्रसिद्ध इस मंदिर में माँ दुर्गा की मूल प्रतिमा की बजाय उसकी प्रतिकृति है। भारत के विभाजन के दौरान उन्हें लाखों शरणार्थियों के साथ ढाका से कोलकाता लाया गया था। 1950 तक, व्यवसायी देवेंद्रनाथ चौधरी ने कुमोरतुली क्षेत्र में देवी के मंदिर का निर्माण किया और अपनी दैनिक सेवाओं के लिए देवी की कुछ संपत्ति की स्थापना की। मूर्ति 1.5 फीट लंबी है, दस भुजाएँ हैं, जो कात्यानी महिषासुरमर्दिनी 'दुर्गा' के रूप में अपने शेर पर आरूढ़ हैं। उनके दो पक्षों में लक्ष्मी, सरस्वती, कार्तिक और गणेश हैं। आजमगढ़ के एक तिवारी परिवार को शाही परिवार द्वारा देवता की दैनिक पूजा के लिए नियुक्त किया गया था।

1946 में, उस परिवार के वंशज कलकत्ता आए और उन्हें फिर से नियुक्त किया गया, जहाँ वे अभी भी लगातार देवी की सेवा करते हैं। ढाकेश्वरी के परिसर में दो प्रकार की स्थापत्य कला के मंदिर हैं। प्राचीन पोंचरोत्ता देवी दुर्गा का है, जिसने जीर्णोद्धार कार्य के बाद अपना वास्तविक स्वरूप खो दिया। इसके अलावा चार शिव मंदिर हैं। अफवाहों के अनुसार, 16वीं शताब्दी में राजा मानसिंह ने इन मंदिरों का निर्माण कराया था, लेकिन यह जानकारी अपुष्ट है। वास्तुकला में बांग्ला चौचाला और शिकोर मंदिर का संलयन देखा जाता है। रतन लाल चक्रवर्ती ने एक लेख में उल्लेख किया है कि - इसकी संरचना और वास्तुकला एक बौद्ध शिवालय की तरह है। इससे उन्होंने यह मान लिया कि मंदिर का निर्माण संभवतः 10वीं शताब्दी में हुआ था। 19वीं सदी में मंदिर कैसा दिखता था? रिदोयनाथ मजूमदार ने मंदिर के बारे में बताया। उस समय मंदिर जंगल से आच्छादित था और इसके उत्तर में उर्दू मार्ग पश्चिम की ओर पिलखाना की ओर जाता था और इसके दक्षिण पश्चिम में मीरपुर रोड था।

ढाकेश्वरी मंदिर सामाजिक-सांस्कृतिक के साथ-साथ धार्मिक गतिविधियों का केंद्र है। हर साल ढाका में दुर्गा पूजा का सबसे बड़ा उत्सव राष्ट्रीय मंदिर में आयोजित किया जाता है, और गणमान्य व्यक्तियों समूह (जैसे बांग्लादेशी राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, विपक्ष के नेता, संसद सदस्य और मीडिया की हस्तियाँ) मंदिर परिसर से बांग्लादेशी हिंदू समुदाय का अभिनंदन करने आती हैं। एक विजय सम्मेलन (दुर्गा पूजा के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

दुर्गा पूजा पूरी होने के कुछ दिनों बाद बगल के परेड मैदान में होता है, और ढाका कैलेंडर में एक प्रमुख सांस्कृतिक कार्यक्रम भी है, जो नियमित रूप से ढाका संगीत के कुछ शीर्ष कलाकारों को आकर्षित करता है।

वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक जन्माष्टमी जुलूस है, जो ढाकेश्वरी मंदिर से शुरू होता है, और फिर पुराने ढाका की सड़कों से होकर निकलता है। यह भगवान कृष्ण के जन्मदिन के दिन होता है, जो बांग्लादेश में भी एक सार्वजनिक अवकाश है और बंगाली कैलेंडर में महत्व में दुर्गा पूजा के बाद दूसरा स्थान है। कॉन्सर्ट और चैरिटी ड्राइव (जैसे बाढ़ राहत) भी पूरे साल मंदिर के भीतर एक नियमित स्थिरता है। हर साल ढाकेश्वरी मंदिर प्रमुख रक्त अभियान और टीकाकरण कार्यक्रम आयोजित करता है, जो ढाका शहर के सभी निवासियों के लिए खुले हैं।

वर्तमान परिपेक्ष में चैत्र एवं शारदीय नवरात्र के दौरान षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी और नवमी के पवित्र अनुष्ठानों के बाद विजयादशमी का पांच दिवसीय उत्सव एवं अनुष्ठानों के साथ इसका समापन ढाकेश्वरी मंदिर में होता है। प्रत्येक वर्ष दुर्गा पूजा का एक भव्य उत्सव ढाकेश्वरी मंदिर में ही आयोजित किया जाता है। कई हजार उपासक यहां माता रानी के दर्शन को आते हैं। सिलीगुड़ी के पास न्यू जलपाईगुड़ी और बांग्लादेश के ढाका कैटोनमेंट के बीच चलने वाली मिताली एक्सप्रेस में ज्यादातर 50 यात्री यात्रा किया करते थे, लेकिन इन दिनों संख्या कई गुना बढ़ जाती है। दोनों तरफ से यात्री सैकड़ों की गिनती में यात्रा कर रहे हैं। यात्रा करने वालों में ज्यादातर श्रद्धालु होते हैं। नवरात्र में भारत से सबसे अधिक लोग माँ ढाकेश्वरी के दर्शन करने जाते हैं। दूर-दूर से आने वाले व्यापारी यहां महंगी साड़ियां, आभूषण, श्रृंगार सामग्री लाकर माता रानी को अर्पित करते हैं। इन वस्तुओं से देवी मां का श्रृंगार किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस मैया के मंदिर में हिंदू और मुसलमान दोनों श्रद्धालु अपनी भक्ति भावनाएं अर्पण करने आते हैं। 12 वीं सदी में सेन राजा वल्लाल सेन ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। यह मंदिर बंगाल वास्तुकला की अद्भुत मिसाल है। यहाँ देवी माँ की प्रतिमा की बिलकुल सीध में चार शिव मंदिर हैं जो अपने आप में एक दुर्लभ संरचना है। बताया जाता है कि दुर्गा पूजा की समाप्ति के पश्चात यहां प्रतिमाओं का विसर्जन जल में न कर के आइना दिखाकर किया जाता है।

1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध का असर इस मंदिर पर भी पड़ा। इसमें आधे से ज्यादा मंदिर क्षतिग्रस्त हो गया था। इसके जीर्णोद्धार में लगभग 25 वर्ष का समय लगा और यह मंदिर जब एक बार फिर से बनकर तैयार हुआ तब 1996 में ही इसे ढाकेश्वरी जातीय मंदिर (राष्ट्रीय मंदिर) घोषित किया गया। आज के समय में यह मंदिर हिंदू मुस्लिम एकता की मिसाल बन गया है।

बांग्लादेश में सिर्फ ढाकेश्वरी मंदिर ही नहीं और भी हिंदू मंदिर

संस्कृति का केंद्र है। राजशाही जिले के अंतर्गत आने वाला उप जिला केंद्र पुठिया हिंदी हिंदू संस्कृति एवं ऐतिहासिक संरचना का ऐसा ही एक केंद्र है। यहां स्थित सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संरचनाएं टूरिस्ट लोगों के विशेष आकर्षण का केंद्र है। पुठिया मंदिर परिसर में बांग्लादेश में उल्लेखनीय पुराने हिंदू मंदिरों का एक समूह शामिल है। मंदिरों का निर्माण पुठिया राजपरिवार के हिंदू जमींदार राजाओं द्वारा किया गया था, जो राजशाही के प्रसिद्ध परोपकारी थे। मंदिरों को विभिन्न प्रकार की शैलियों में टेराकोटा से बनाया गया है जो विशिष्ट और बांग्ला वास्तुकला को अन्य प्रभावों के साथ जोड़ते हैं।

यहां पंचरत्न गोविंद मंदिर दर्शनीय है। इसमें 5 रत्नों या शिखरों की स्थापत्य विशेषता है। यह पुठिया राजबाड़ी के भीतरी परिसर में स्थित है और इसे पुठिया रॉयल की महारानीयों में से किसी एक ने बनवाया था। यह मंदिर एक वर्गाकार भवन है जिसमें 5 अलंकृत रत्न या मीनार हैं। इसमें साधारण सतह प्लास्टरिंग की है लेकिन चारों बाहरी दीवारों पर लाल रंग की टेराकोटा पैटर्न के साथ बारीक चित्रण है। ऐसा कहा जाता है कि मंदिर की वास्तुकला लगभग 100 साल पहले बने कांटानागा मंदिर से प्रेरित है। टेराकोटा डिजाइन पैन्लों में बने हुए हैं जिसमें रामायण के हिंदू महाकाव्यों, कृष्ण राधा से संबंधित रोमांटिक दृश्यों का चित्रण है। मंदिर के गर्भ गृह में एक कृष्ण जी की छवि है जिसकी स्थानीय हिंदुओं द्वारा पूजा की जाती है। बांग्लादेश के पुठिया उपजलि में कई पुराने हिंदू मंदिर हैं। वर्तमान समय में बांग्लादेश के सबसे अधिक हिंदू मंदिर यही हैं। यह मंदिर राजपरिवार हिंदू जमींदार राजा द्वारा बनवाए गए थे। इसी प्रकार बांग्लादेश के राजशाही डिवीजन के बोगरा जिले में भवानीपुर शक्तिपीठ करातोया नदी के किनारे स्थित है। इस मंदिर को हिंदू धर्म के 51 शक्तिपीठों में गिना जाता है।

यह मंदिर, 12 बीघे के एक अहाते में बीचों - बीच बना हुआ है। मंदिर प्रांगण में एक शिव मंदिर और काल भैरव का मंदिर भी स्थित है। मंदिर के उत्तर में एक सेवा आंगन और शंख पुकुर तालाब है जिसका निर्माण एक स्थानीय राजघराने ने करवाया था। प्रतिवर्ष इस मंदिर प्रांगण में माघ पूर्णिमा, रामनवमी और दशहरे पर मेला लगता है। इसके संबंध में ऐसी मान्यता है कि यहां माँ शक्ति के बाएं पैर की पायल गिरी थी। भवानीपुर में देवी को अपर्णा और काल भैरव की वामन के रूप में उपासना की जाती है। इसके अलावा ढाका में, रामकृष्ण मिशन जय काली मंदिर लक्ष्मी नारायण मंदिर स्वामी बाग मंदिर और सिद्धेश्वरी काली मंदिर है। गौरतलब है कि मंदिरों में हिंदुओं के साथ-साथ मुसलमानों की आस्था दिखाई पड़ती है। जिस तरह से ढाकेश्वरी मंदिर को राष्ट्रीय मंदिर घोषित किया गया और जिस तरह उसकी देख रेख और व्यवस्था है, वो भारत में स्थित कई मंदिरों के लिए भी मिसाल है।

'जय मां ढाकेश्वरी'

कोशिश

- कमलेश चतुर्वेदी, गुना (म.प्र.)

आजकल 10वीं और 12वीं क्लास के रिजल्ट्स आ रहे हैं। 95 प्रतिशत स्कोर करने वाले बच्चों के अभिभावक बड़े गर्व से उनका नाम और फोटो डाल रहे हैं। बहुत से मित्रों ने आईसीएससी बोर्ड परीक्षा में अपने पुत्र-पुत्रियों को मिले गौरवशाली अंक साझा किए हैं। मला अपनी संतान की उल्लेखनीय सफलता पर किस माता-पिता को गर्व नहीं होगा ? उनकी छाती चौड़ी नहीं होगी ? ऐसे सभी सफल बच्चों और उनके माता-पिता को बहुत बहुत बधाई।

लेकिन उनका क्या जिन बेचारे बच्चों ने 54 प्रतिशत स्कोर किया उनके अभिभावकों के पास गर्व करने के लिए कुछ नहीं है क्या ? ऐसे छात्र और छात्राएँ जो इस परीक्षा में अच्छे अंक नहीं ला सके। अपने माता-पिता की आशाओं और आकांक्षाओं पर खरा नहीं उतर सके। वे निश्चित ही निराश और हताश होंगे। हो सकता है, उन्हें तरह तरह के तानों का भी सामना करना पड़ रहा हो। मेरी यह पोस्ट ऐसे ही छात्र-छात्राओं और अभिभावकों के लिए है :

1987 की बात है। इटली के रोम नगर में एथेलेटिक्स की वर्ल्ड चैम्पियनशिप प्रतियोगिता हो रही थी।

1500 मी. की दौड़ में भारत का प्रतिनिधित्व कश्मीरा सिंह कर रहे थे। 1500 मीटर की दौड़ में ट्रैक के कुल पौने चार चक्कर लगाने होते हैं। यानी पहले राउंड में कुल 300 मीटर और बाकी 3 राउंड में कुल 1200 मी.।

दौड़ शुरू हुई, कश्मीरा सिंह ने दौड़ शुरू होते ही बढ़त बना ली। ट्रैक पर लगभग 40 से ज्यादा धावक दौड़ रहे थे। पर कश्मीरा सिंह सबसे आगे थे। कमेंटेटर ने बताया कि भारत के धावक सबसे आगे चल रहा है।

तीसरे राउंड तक कश्मीरा सिंह सबसे आगे चले। पर कमेंटेटर उनकी इस दौड़ से कतई इम्प्रेस नहीं था। वो पीछे चल रहे किन्ही दो अन्य धावकों पर निगाह रखे थे। बहरहाल चौथा और आखिरी राउंड शुरू हुआ। एक धावक बढ़ के कश्मीरा सिंह से आगे आ गया। और उसके बाद कश्मीरा सिंह उस भीड़ में खो गए और फिर कभी नहीं दिखे। बाद में जब हम लोगों ने रिकॉर्ड बुक देखी तो पता चला की शायद कश्मीरा सिंह 40 में से 38वे स्थान पर रहे। जिन्दगी की दौड़ में इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप

पहले राउंड में आगे हैं कि नहीं। फर्क इस बात से पड़ता है कि फिनिशिंग लाइन पर सबसे पहले कौन पहुँचा। उस दौड़ में सोमालिया के अब्दी बिल फिनिशिंग लाइन पर सबसे पहले पहुंचे और उन्होंने स्वर्ण पदक जीता।

इतिहास में नाम अब्दी बिल का दर्ज है न कि कश्मीरा सिंह का। मित्रों अभी तो जिन्दगी की marathon दौड़ का बमुश्किल पहला राउंड पूरा हुआ है फिनिशिंग लाइन पे न जाने कौन पहुंचेगा सबसे पहले। शुरू में बहुत तेज दौड़ने वाले जरूरी नहीं की इसी दमखम से लगे रहे।

सबसे आगे वो आएगा जो धैर्य पूर्वक लगा रहेगा। जो बिना हार माने दौड़ता रहेगा। वो जिसकी निगाह लक्ष्य पे रहेगी।

जीतना जरूरी भी नहीं। मजा दौड़ पूरी करने में भी है।

जिन्दगी की दौड़ में अक्सर 54 % भी जीतते हैं।

याद रखना chinese bamboo सबसे देरी से उगता है पर उगते ही 7 हफ्ते में 40 फुट का हो जाता है।

दौड़ते रहो रुकना मत

युवा उम्र चहकने की होती है

- आशीष चतुर्वेदी, आगरा

युवा उम्र परिश्रम से चहकने की होती है,
अपनी लग्न और मेहनत से महकने की होती है,
ये उम्र कुछ अपने तो कुछ अपनों के,
सपने पूरे करने की होती है,
है हर अगर जिंदगी मुफ्लिश में तो,
जिंदगी की हर मुश्किल को दूर करने की यही उम्र होती है,
है अगर कदम कमजोर तो हि बस बहकने की होती है,
और जो इस उम्र में होंसलों से जमाते हैं कदम,
उनके कदमों में जीवन की हर खुशी होती है,
ये युवा उम्र परिश्रम से चहकने की होती है,
जीवन है अनमोल बस यही कहती है।

बीमा- एक जीवन कवच

- निखिल चतुर्वेदी, लखनऊ

(वीमा एवं वित्तीय सलाहकार)

आधुनिक जीवन शैली में आक्समिक घटनाएं हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गई है, कोरोना के बाद तो मृत्यु भी एक चिंगारी बन गई है, कभी कभी भी कहीं भी शार्ट सर्किट जैसे ही आ जाती है। आजकल एक विज्ञापन आता है कि मकान किराए, बच्चों की फीस तुम तो बिना टर्म इश्योरेन्स लिए बिना ही चले गए..... Insurance is an Assurance towards Life

एकल परिवार, स्वास्थ्य घटना - दुर्घटना, शार्ट सर्किट, प्राकृतिक आपदा, दंगा - युद्ध आदि के कारण जीवन एक अनिश्चित काल ही बन गई है, ऐसे अवसर पर इश्योरेन्स ही एक आशा की किरण लगती है, जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की भांति ही विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न भिन्न वीमा योजनाएं उपलब्ध हैं।

इसी संदर्भ में महासभा की कार्यकारिणी की होलीपुरा एवं फरौली मीटिंग में ललित जी (लखनऊ) ने सामूहिक स्वास्थ्य वीमा योजनाओं पर प्रस्तुति दी थी। आधुनिक काल में उचित स्वास्थ्य सेवाएं आम आदमी के बजट में संभव ही नहीं है, सभी लोगों को यथा संभव अपने परिवार के लिए स्वास्थ्य वीमा अवश्य लेना चाहिए।

इश्योरेन्स लेने से पहले कुछ सावधानियां जरूर बरतें ----

1. जब भी कोई इश्योरेन्स कवर ले तो कंपनी एजेंट से पूछे कि किन किन हालातों में इश्योरेन्स की रकम मिलेगी और किन किन हालात में नहीं मिलेगी।
2. इनश्योरेन्स के साथ ही कंपनी कुछ अतिरिक्त प्रीमियम लेकर एडिशनल कवर के आफर भी देती हैं, एजेंट से इस बारे में जानकारी अवश्य करें।
3. एजेंट से पूछे कि अगर कभी कवरेज बढ़वाना चाहे तो कंपनी ऐसा करने देगी और अगर हां तो किस सीमा तक करने देगी।
4. जिस कंपनी का वीमा कवर ले रहे हैं, उसकी आफिशियल वेबसाइट पर क्लेम सेटलमेंट रेश्यो अवश्य देखें और दूसरी कंपनियों के क्लेम सेटलमेंट रेश्यो से तुलना करें।
5. एजेंट से पूछे कि अगर कभी पालिसी को पोर्ट (सिम की भांति एक कंपनी से दूसरी कंपनी में जाना) कराना पड़े तो पोर्टबिलिटी के क्या नियम एवं शर्तें लागू होंगे।



नामिनी अवश्य लिखें

आप किसी भी कंपनी से किसी भी प्रकार का इश्योरेन्स लेते हैं तो उसमें नामिनी अनिवार्य रूप से नोट करें। इस विषय में नामिनी को पूरा विवरण अवश्य बताना चाहिए। नामिनी वह शख्स होता है जो पालिसीधारक की मृत्यु के बाद कंपनी से इश्योरेन्स की रकम लेने का हकदार होता है। महत्वपूर्ण -- (नामिन कोई भी शख्स हो सकता है, लेकिन नामिनी मृतक के वीमा से मिली रकम का मालिक नहीं होता बल्कि सिर्फ ट्रस्टी या केयरटेकर होता है। नामिनी को मृतक के वीमा से मिली रकम को कानूनी वारिस या उत्तराधिकारियों तक पहुंचाना होता है। अगर नामिनी मिली रकम को कानूनी वारिस को नहीं देता है तो कानूनी वारिस कोर्ट का दरवाजा खटखटा सकता है। एक्सपर्ट्स के अनुसार बेहतर होगा कि कानूनी वारिस को ही नामिनी लिखवाएं, जिससे परेशानी न हो।) एक बार नामिनी नियुक्त करने के बाद उसे कभी भी और कई बार बदल सकते हैं।

सिर्फ इश्योरेन्स में ही नहीं बल्कि बैंक एकाउंट, इन्वेस्टमेंट एकाउंट (एफ डी, म्यूचुअल फंड, डीमेट एकाउंट आदि) के साथ ही किसी भी प्रकार की प्रापर्टी में भी नामिनी का नाम अवश्य लिखें। नामिनी बनाने के बाद भी आवश्यकतानुसार वसीयत जरूर बनाते रहे।*

*टर्म इश्योरेन्स तो लाइफ इश्योरेन्स कंपनी ही देती है, इसमें पालिसी होल्डर की वीमारी, दुर्घटना या किसी भी वजह मृत्यु के

चतुर्वेदी चन्द्रिका

बाद कानूनी वारिस को तय रकम मिल जाती हैं। एक्सपर्ट्स के अनुसार किसी भी शख्स को अपनी उम्र तथा सालाना आय के आधार पर अधिकतम राशि का टर्म इन्श्योरेंस अवश्य लेना चाहिए।

अन्य इश्योरेंस कवर जनरल इश्योरेंस कंपनी ही देती हैं।

***प्रापटी इश्योरेंस** - इसमें घर के साथ ही दुकान, आफिस, फैक्ट्री, गोदाम आदि में चोरी या संधमारी के दौरान हुए नुकसान को कवर किया जाता है। प्रापटी इश्योरेंस लेते समय ही कंपनी से पूछें कि प्लान में कौन कौन सी आइटम कवर होंगे, पालिसी लेने के साथ ही एजेंट से लिखित में उन आइटम कवर का रिकार्ड बनवा लें। अधिकांश कंपनियां चोरी के साथ ही डकैती, आग, प्राकृतिक आपदा आदि अन्य कारणों से हुए संबंधित सभी नुकसान की भरपाई एक ही पालिसी में कवर कर देती हैं, जिससे अलग अलग कवर लेने की जरूरत नहीं होती है। पालिसी में व्यक्ति या व्यक्तियों की मृत्यु या अपंगता के नुकसान का भी आकलन किया जाता है। कुछ पालिसियों में आपको लीगल या मेडिकल लायबिलिटी का भी भुगतान करती हैं, जिसमें आपके हेल्पर या थर्ड पार्टी को नुकसान पहुंचा हों। लेकिन इन्श्योरेंस पालिसी लेते समय आपको सतर्कता बरतनी चाहिए, जिससे किसी एक्सपर्ट की मदद से पाइंट टू पाइंट नुकसान भुगतान की बात लिखित में स्पष्ट हो जाएं।

***ट्रैवल एवं एक्सीडेंट इश्योरेंस** - कुछ सरकारी बसों, ट्रेन या हवाई यात्रा में टिकट लेते ही स्वतः वीमा होता है। लेकिन व्यक्तिगत यात्रा एवं एक्सीडेंट पालिसी लेना सदैव बेहतर होगा, जिससे आवश्यकतानुसार घायल या अपंगता होने पर मेडिकल तथा मृत्यु होने पर क्लेम सेटलमेंट मिल सकें। एक्सपर्ट्स के

अनुसार एक्सीडेंट कवर प्लान सालाना कमाई का कम से कम 5 गुना होना चाहिए।

महासभा कार्यकारिणी सदस्य दिलीप सिकंदरपुरिया ने इस चर्चा में बैंक सेविंग एकाउंट द्वारा संचालित प्रधानमंत्री जीवनी ज्योति वीमा योजना (PMJJBY) एवं प्रधानमंत्री सुरक्षा वीमा योजना (PMSBY) की उपयोगिता बताई। आधुनिक जीवन में वृद्धावस्था में वित्तीय संकट एक सच्चाई है, अतएव जीवन काल में उचित समय पर पेंशन योजना प्रारंभ कर एल आई सी या अन्य संस्थाओं के साथ भविष्य सुरक्षा पर अवश्य कदम उठाए।

एक्सपर्ट्स के अनुसार किसी भी प्रकार का इश्योरेंस पालिसी कवर लेने से पहले सभी नियमों एवं शर्तों को ठीक से समझ लेना चाहिए तथा एजेंट से सभी शंकाओं को दूर कर कंपनी के दावों को लिखित रिकॉर्ड में दर्ज कर लिया जाए।

कंपनी क्लेम सेटलमेंट न करें तो

- * सबसे पहले वीमा कंपनी के पास शिकायत दर्ज कराएं, कंपनी की वेबसाइट पर कंपनी की ईमेल आईडी होती है।
- * अगर वीमा कंपनी 15 दिनों में शिकायत का निवारण नहीं करती है तो भारतीय वीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (IRDAI) की ऑफिशियल वेबसाइट irda.gov.in पर आनलाइन शिकायत दर्ज कराएं।
- * इसके अतिरिक्त IRDAI की ओर से इश्योरेंस ओम्बुड्समैन के पास भी इश्योरेंस कंपनी की शिकायत कर सकते हैं।
- * कहीं से भी कोई सुनवाई न हो या फेसले से संतुष्ट नहीं हैं तो उपभोक्ता अदालत का दरवाजा खटखटा सकते हैं।

सिसकियाँ

- मंजु लता चतुर्वेदी

सिसकियाँ प्रकृति की
ओम की संरचना में
समाया ब्रह्म नाद!
दसों दिशाओं को करता
गूँजायमान.....
जल, थल, नभ को भेदता
आकाश पाताल में समाता।
दिशाओं से बहती अविरल धारा

गंगा, जमुना, सरस्वती, नर्मदा, कावेरी
पवित्र अछूती जीवन धारा
लोलुपता, स्वार्थ, अहंकार ने
संक्रमित कर डाला...
ये सिसकियाँ नहीं....
आने वाले समय की रोदृता
प्रकृति की पीड़ा, उपहास है संवेदनहीन मानव की क्रूरता !
का विरोध, बदला !!!

चतुर्वेदी और उनकी विरासत: एक दृष्टिकोण

- अभिन्न चतुर्वेदी, अलीगढ़

वेद प्राचीन हिंदू शास्त्रों का एक संग्रह है जो वैदिक काल के धर्म और संस्कृति में अंतःप्रदान करता है। चतुर्वेदी, जिन्हें चार वेदों को जानने वाले के रूप में भी जाना जाता है। अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति थे, जिन्होंने वैदिक ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस लेख में हम वैदिक काल में चतुर्वेदी के महत्व और हिंदू धर्म को आकार देने में उनकी भूमिका का पता लगाएंगे। चतुर्वेदी शब्द, संस्कृत शब्द चतुर से आया है। जिसका अर्थ है चार, वेद का अर्थ है ज्ञान इसलिए एक चतुर्वेदी वह है जिसे चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में महारत हासिल है। इन चार वेदों में भजन, अनुष्ठान और दार्शनिक शामिल हैं जो हिंदू धर्म की नींव बनाते हैं। इन वेदों का ज्ञान पवित्र माना जाता है और मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी पारित किया गया है। वैदिक काल से ही चतुर्वेदी को उच्च सम्मान दिया जाता है, और उनके ज्ञान का सम्मान किया जाता है। वे वेदों को संरक्षित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार थे कि ज्ञान सही तरीके से प्रसारित हो।

चतुर्वेदी की भूमिका केवल वेदों को याद करने और पढ़ने तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन स्थितियों में व्याख्या और लागू करना भी था। चतुर्वेदी यश (बलिदान) सहित धार्मिक समारोहों और अनुष्ठानों को करने के लिए भी जिम्मेदार थे, और यह सुनिश्चित करते थे कि ये अनुष्ठान सही ढंग से आयोजित किए जाएं। उन्होंने मानव संसार को परमात्मा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उन्हें देवताओं और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ के रूप में देखा गया।

अपने धार्मिक कर्तव्यों के अलावा, चतुर्वेदी ने प्राचीन भारत के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका



निभाई। वे अक्सर राजाओं और शासकों के सलाहकार के रूप में कार्यरत थे, और शासन और नीति-निर्माण के मामलों में उनके ज्ञान की मांग की जाती थी। चतुर्वेदी शिक्षक और संरक्षक भी थे, जो अपने ज्ञान को छात्रों तक पहुंचाते थे जो बाद में स्वयं नेता और विद्वान बन जाते थे। चतुर्वेदी किसी विशेष जाति या वर्ग तक सीमित नहीं थे और समाज के विभिन्न वर्गों में पाए जाते थे।

हालांकि, वे आमतौर पर ब्राह्मण थे, जिन्हें वैदिक काल से ही सर्वोच्च जाति माना जाता है। ब्राह्मण पारंपरिक रूप से ज्ञान को संरक्षित करने और प्रसारित करने के लिए जिम्मेदार थे, और इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि चतुर्वेदी मुख्य रूप से ब्राह्मण हैं।

वैदिक काल में चतुर्वेदी के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। वे वैदिक ज्ञान के संरक्षक हैं और उन्होंने इस ज्ञान को भविष्य की पीढ़ियों तक पहुंचाने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी भूमिका न सिर्फ धार्मिक और आध्यात्मिक मामलों से आगे बढ़ी बल्कि प्राचीन भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन पर भी इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा चतुर्वेदी की विरासत को आज भी महसूस किया जा सकता है, इसी कारण कई हिंदू उन्हें अपनी विरासत और संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा मानते हैं।

कलूटी कहे या गुलबिया

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

दोपहर का समय था। मैं सो रही थी। तभी डोर बेल बजी इतनी गर्मी भरी दोपहर में कौन? होगा। मन में खीझ आयी उठने में, दरवाजा खोला सामने चमेलिया खड़ी थी।

माँ कहकर वह मेरे पैरों की तरफ झुक गई। मैंने कहा नहीं लड़कियाँ पैर नहीं पड़ती।

उसने अपनी जानकारी दी मैं अब तहसीलदार हो गई हूँ। यही कानपुर में पोस्टिंग मिली है।

उसे देखकर मेरी आँखों के सामने पुरानी स्मृतियाँ चलचित्र की तरह घूमने लगी। जैसे कल की ही बात हो।

'कलूटी मैजा रही हूँ' आवाज देखकर मैंने कहा।

हउ माई कलूटी ने उत्तर दिया

कलूटी हमारे घर के सदस्य जैसी थी। उसका नाम गुलबिया था। मेरे बेटे ने उसका रंग देखकर उसका नाम ही बदल दिया, और उस नाम से वह कभी गुस्सा नहीं होती थी।

घर का बर्तन झाड़ू पोंछा कपड़ा धोना सब उसके जिम्मेदारी थी। कभी भी वह बीमार पड़ जाए तो घर पूरा अस्त व्यस्त हो जाता था। अपने पति की मृत्यु के बाद मैं टूट सी गई थी। घर के हर कोने में उनकी याद बसी थी, हरदम लगता जैसे अब भी मुझे पुकार रहे। मैं उनसे बात करती। घर वाले समझ गए इनको यहाँ से दूसरे घर में शिफ्ट करना पड़ेगा।

मेरे बड़े बेटे ने श्याम नगर में एक प्लॉट खरीदा था। सोचा था इस पर मकान बनाएंगे मगर घर की परिस्थितियाँ ऐसी होती रही मकान शुरू ही नहीं हो पाया। बीच-बीच में जाकर प्लॉट देख आते कोई कब्जा ना कर ले। वहाँ बहुत से लोगों ने प्लॉट लिए थे, लेकिन प्लॉट कानपुर शहर से थोड़ा बाहर था। इसलिए कोई मकान बनाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। तभी सूचना मिली मामा लोगों की पूरी जमात आई है और वह उस खाली मैदान समझ कर अपनी झुगियाँ वहाँ बना रहे।

अपनी शंका दूर करने के लिए हम लोग भी अपना वह प्लॉट देखने गए देखकर पैरों से जमीन खिसक गई, हमारे प्लॉट के ऊपर झुग्गी बनाने के लिए बाँस के बने ढाँचे खड़े थे। क्योंकि एक झुग्गी बन जाने के बाद उन्हें हटाना बहुत मुश्किल था। बेटे ने आव देखा



न ताव ढाँचे पैर से तोड़ दिये तथा बाँस एक साथ झाड़ियों में फेंक दिये। तभी बीस बाइस साल की एक युवती आई रंग बिल्कुल काला चेहरे पर गोल गोल सिर्फ आँखें चमक रही थी जिनका रंग पीला पीला था। शरीर गठ्ठा हुआ था कद सामान्य था। तेजी से भागती हुई आयी और लड़ने लगी। उसकी आधी बात समझ में आती आधी नहीं। उसको समझाने के बाद भी वह समझने को तैयार नहीं थी उसका रोष कम नहीं हो रहा था।

धीरे धीरे उनके साथ वाले लोग भी आ गए भीड़ बढ़ गई अब उसमें और जोश आ गया मेरा बेटा भी कमजोर नहीं पड़ रहा था।

उसने कहा मैं पुलिस को बुलाता हूँ आपने हमारी जमीन के ऊपर कब्जा किया ऊपर से लड़ाई लड़ रहे हो।

पुलिस बुलिस से हम नहीं डरते

किसी और को धमकाना वह लड़की बोली

बेटा भी कम नहीं था अरे कलूटी चुप होती है कि नहीं।

चिल्ला तो ऐसे रही है जैसे जमीन खुद की खरीदी हुई है।

मैंने फोन लगाना शुरू किया तब वह थोड़ा शान्त हो गई तथा झुग्गी बनाने का अपना सामान उठाकर लेगयी। हम लोगों ने विचार किया आप तुरन्त बाँकड़ी वाल यहाँ बनानी पड़ेगी तथा गेट बनाकर ताला डालना पड़ेगा। यह सोचकर वहाँ से चले चलते चलते बेटा कलूटी को चेतावनी भी दे आया।

झटपट प्लॉट पर सामान डलवा दिया गया। सभी ने राय दी जगह सुरक्षित रखनी है तो आधी जगह मकान बना लो बाकी बाद में बनाते रहना।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

हम लोगों को भी बात उचित लगी बाऊँड़ी कौन सी सुरक्षित रहेगी कोई भी तोड़कर घुस जाएगा। दो कमरे रसोई लेट बाथ बनाने का फैसला हुआ। भूमि पूजन करने फिर हम लोग गए और काम शुरू हो गए। भूमि पूजन के समय ही कलूटी और दो तीन लोग आ गए साहब हमें काम दे दो।

क्यों कलूटी क्या अपनी झुग्गी बनानी है बेटे ने व्यग्न किए

नहीं साहब हम गरीब लोग दो रोटी का जुगाड़ हो जाए उनका मुखिया बोला। वह लोग ही मकान पर मजदूरी करने लगे गिट्टी तोड़ने का काम ईंट ढोने का काम करने लगे। बेटे का ट्रांसफर हो गया था, वह जल्दी से जल्दी मकान बनाना चाहता था।

काम तेजी से चल रहा था और कलूटी डबल डबल काम करती ज्यादा मजदूरी मिलेगी। मैंने स्कूल से लम्बी छुट्टी ले ली

मैं सुबह से जाकर वहाँ पर मकान का काम देखती खाना पानी सब साथ में ले जाती। कभी-कभी मुझे भी उस पर दया आती उसको आवाज लगा कर कहती कलूटी आ जा थोड़ी देर बैठ जा पानी पी ले।

धीरे धीरे उसको मेरे ऊपर विश्वास जम गया और वह अपनी जिंदगी की किताब के पन्ने खोलने लगी।

कलूटी की जिंदगी के बारे में मुझे बताना शुरू ही किया था वही सुनकर बहुत बुरा लग रहा था।

तभी मिस्त्री ने आवाज लगा दी

गुलाबिया कहाँ मर गई'

पथरा ला

और वह उठ कर चली गयी, मगर मेरे दिमाग की वही हालत कर गई जो शान्त पड़ी नदी में एक पत्थर फेंकने से जो हलचल होती है वही हालत मेरे दिमाग की थी।

1 दिन फिर मुझे मौका मिल गया बेटा मुझे देर से लेने आया तब तक कलूटी बैठी रही, और सुनाती रही।

माई मैं बड़ी अभागिन थी माँ पैदा होते ही खत्म हो गई बाबू कहता था दाई भी नहीं मिली थी तेरी माँ ने तेरा नाडा अपने हाथ से चाकू से काटा था थोड़ी देर ठीक रही और उसके बाद खत्म हो गई।

बाबू ने मुझे किसी तरह पाल कर 2 साल का किया काम करने जाता साथ ले जाता मैं वही बैठी रहती भूख लगती प्यास लगती रोती रहती बीच में आकर बाबू रोटी के टुकड़े तोड़ कर रख जाता कभी खाती कभी नहीं।

थोड़े दिनों बाद मेरी दूसरी माँ आ गई। बाबू निश्चित हो गया लेकिन नई माँ बाबू के जाते ही चली जाती मुझे झुग्गी के अन्दर बैठा कर और रस्सी से बाँध जाती ताकि मैं बाहर ना आ जाऊँ। प्यास लगती भूख लगती बैठी बैठी रोती रहती कभी-कभी पड़ोसन फिर दादी अम्मा खोलकर मुझे निकालती नई माँ को समझाती लेकिन उन पर कोई असर नहीं हुआ।

और 1 दिन नई माँ घर छोड़ कर चली गई किसी के साथ। बाबू रात में आया ढूँढा नहीं मिली बाद में उसे खबर लग गई कि वह चली गई। अब बाबू मुझे छोड़कर जाने लगा दो-दो दिन रात में नहीं आता मैं पूरे मोहल्ले में घूमती कोई खिलाता कोई पानी दे देता और कहीं नींद आती वही सो जाती।

धीरे धीरे मुझे भी समझ आ गई।

और मैं भी मजदूरी करने के लिए जमात में मिल गई।

तब से लगातार घूमती हमारा मुखिया बहुत ख्याल रखता है बेटे की तरह मानता है कोई नजर उठाकर नहीं देख सकता।

एक बार मन में आया तुझे देखेगा कौन। कभी-कभी बेटा मजाक करता याद रात में कोई इसे देख ले सच में भूत समझ ले रंग अंधेरे में मिल जाता है चेहरा दिखाई नहीं पड़ता सिर्फ आँखें चमकती है गोल गोल उल्लू की तरह।

मैंने देखा वह बाबू का नाम लेते लेते उसकी आँखें बे मौसम की बरसात की तरह बरसने लगती।

आँसू झट से पोंछ कर काम पर लग जाती।

कलूटी के प्रति मेरे मन में और भी सहानुभूति हो गई।

पत्थर तोड़ते तोड़ते हाथ की खाल चमड़े जैसी हो गई थी जगह-जगह गाँठे पड़ गई थी।

मकान का काम समाप्त हो गया अब जमात दूसरी जगह जाने की तैयारी करने लगी। जब तक नहीं गई मेरे साथ घर आती साफ सफाई घर की कर देती। बेटे का ट्रांसफर हो गया अब मैं घर में अकेली थी। कलूटी को रात में वही रोक लेती।

और 1 दिन कलूटी जमात के साथ चली गई। जाते-जाते मैंने उसे कुछ कपड़े तथा 1 जोड़ी पायल दी उसे पायल पहनने का बहुत शौक था जस्ते की पायल पहनती थी।

धीरे धीरे दो-तीन साल बीत गए हम लोग भी कलूटी को भूल गए।

इसी बीच मैं नए मकान में शिफ्ट हो गई क्योंकि और लोगों के मकान बन गए थे इसलिए अपने मकान में चली गई। और रिटायर्ड भी हो गई थी। स्कूल जाने का इंज़ट समाप्त हो गया था।

1 दिन में सर्दियों में बाहर बैठकर धूप सेक रही थी धूप चली गई और ठंड बढ़ने लगी मैं अन्दर आ गई और गेट बन्द कर अपने लिए चाय बनाने लगी। उसी समय काम करने वाली बाई आ गयी तभी डोर बेल बजी इस समय कौन होगा सोचते हुए मैंने बाई से कहा दरवाजा खोल दे।

उसने दरवाजा खोला। मैं भी पीछे पीछे आ गई

देखा सामने एक दुबली पतली लड़की से खड़ी थी रंग बिल्कुल काला हाथ में एक मटका तथा एक छोटी सी बच्ची 3 साल की रही होगी।

होमाई मटका पानी दे दे'

और मेरे पैरों पर झुक गई माई तोहार कलूटी और चेहरे पर

चतुर्वेदी चन्द्रिका

खुशी आ गई मैंने उसे ध्यान से देखती रही तब भी ठीक से पहचान नहीं पायी।

मैंने दोपहर में देखा था सामने कुछ झुगियां बन रही थी। तुम सामने वाली झुगी से आयी होमाई मुझे आवाज कुछ पहचानी सी लगी मैंने उसे ध्यान से देखा पहचान ली

अरे कलूटी तुम कैसे आई,

माई बदल गए बाल पर सफेदी आ गई ' तोहार

वह बैठ गई मैंने उसे चाय पिलाई पानी दिया फिर पूछा इतने दिन कहाँ रही

'माई हमारी जमात नखलऊ गई एक ठेकेदार के सगे'

पर तुम्हारी हालत कैसी हो गई

माई अपन नसीब खोटा है'

यह बच्ची कौन है?

माई हमार है

बच्ची का रंग साफ है बाल घुँघराले थे देखने में सुन्दर थी।

माई अपन ने शादी बना लिया था। नरवलऊ का जो मुशी था बड़ा मनचला मुझे छेड़ता रहता एक दिन मुखिया ने देख लिया उसने मेरा हाथ पकड़ लिया।

मुखिया ने पहले ओकर पिटाई कीन्ही " बोला चीर कर रख दूँगा चल अभी शादी कर। बकरा कटा हमार शादी बन गई।

हमारा नसीब ही खोटा था।

थोड़े दिन ठीक चला।

माई एक दिन गजब कर दी। एक मर्द ले आया। मुझसे धंधा करने के लिए कहने लगा।

माई मैं मना करें पैर पड़े।

बो .नाश पीटा कसाई हमरै मार मारी। खाना पानी बन्द।

हम ना झुकव

हम अपने मर्द से बोला अब कोई मर्द लाया ओकर और तोय चीर कर रख देव

वह दगा दे भाग गया। चमलिया हमार कोख में था।

ना खाने का ठिकाना ना पानी का काम कोई मिलता नहीं पड़ोसी दया करके जो देते वही खा कर रहे।

यह चमेलिया हमारे बन्धन हुइगे। हमारा मुखिया हमारी सहायता

कीन्ही। जमात फिरिया इहाँआई।

कलूटी चली गई पर शान्त नदी में एक कंकड़ फिर से फ़ेककर लहरें उठा गई।

सारी रात सोचती रही नींद नहीं आई।

सुबह मैंने उसे बुलाया और उससे कहा जब तक काम नहीं है मेरे घर काम करो पीछे गाड़ी का गैराज है उसमें रहो। सुरक्षित रहोगी।

तबसे कलूटी हमारे घर का सारा काम करती। रिश्तेदार कहते

इतना विश्वास ठीक नहीं कभी धोखा देकर जाएगी लेकिन मेरा मन मानने को तैयार न था।

पड़ोस में भी चर्चा चलती वह कलूटी के कान तक गई 1 दिन कहने लगी' अपन चमेलिया की सौं कहत मर जाऊँ पर धोखा ना दे हूँ।

कभी-कभी मन में शंका थी कहीं बात सही ना हो जाए मुझे अपने पति की वही बात याद आती तुम सब के ऊपर विश्वास कर लेती हो तुम धोखा खाओगी।

माई हमार गर्दन काट दीजिए अगर धोखा करो

अरे कलूटी कहने दो दुनिया है 'तुम्हारे माई तो नहीं कहे''

बस चमिलिया बड़ी हो जाए औ कर चिंता है।

चमेलिया को मैं खाली समय पढ़ाने लगी मेरा समय भी पास होता और वह भी पढ़ने लगी समझदार बच्ची थी।

धीरे धीरे चमेलिया पढ़ने लगी। कोई देख कर कह नहीं सकता था यह कलूटी की बेटी है।

बीच-बीच में बेटा भी आता आते ही कहता कलूटी अब कहाँ झुगी बना रही है। दूसरा प्लॉट खरीदलियाहै।

चमेली को प्राइवेट परीक्षा दिलवा दी क्योंकि पास में कोई स्कूल नहीं था और उसे अकेला शहर भेजना नहीं चाहती थी।

अब चमेली अपनी माँ के साथ घर के कामकाज में हाथ बँटा देती।

अब कलूटी बीमार रहने लगी थी।

पर एक दिन कलूटी धोखा दे गई छोड़ गई है झूठी दुनिया और जिम्मेदारी चमेलिया की मेरे ऊपर।

कभी-कभी भगवान किसी के साथ ज्यादाती कर देता है। सारी जिंदगी कष्ट ही कष्ट भोगतीरही

चमेली मेरी छत्रछाया में थी।

मुखिया के साथ जाने को मैंने मना कर दिया। तथा उसे आदिवासी हॉस्टल में डाल दिया

मैं दूसरी कलूटी नहीं बनाना चाहती थी। सरकारी योजना से स्कॉलरशिप तथा रहने के लिए हॉस्टल मिल गया। पढ़ने में तो वैसे ही तेज थी और मन लगाकर. पढ़ती रही।

चमेली ने b.a. पास कर लिया था और प्रतियोगिताओं में बैठने लगी साथ में पढ़ाई भी।

ईश्वर और भाग्य ने साथ दिया

सरकारी योजना आरक्षण का लाभ मिला और वह तहसीलदार बन गई।

मेरी भी जिम्मेदारी खत्म थी। जीप का हार्न सुनकर मेरी तंद्रा टूटी। मैं जा रही हूँभूख लगी थी किचन में जाकर खा लिया चाय बना के लाई हूँआप पी लो अब मैं जा रही हूँ कोई काम हो तो फोन करिएगा और चमेली चली गई और मैं जाती हुई जीप को लगातार देखती रही।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

समाज समाचार



■ रवीन्द्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी, भोपाल में स्थापित भव्य लक्ष्मीनारायण मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा और धर्मसभा हुई। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु परंपरागत और तकनीकी शिक्षा के साथ अध्यात्म, दर्शन, लोक संस्कृति परंपरा की शिक्षा भी परम आवश्यक होती है। भोपाल स्थित प्रसिद्ध रवीन्द्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी के परिसर में भव्य लक्ष्मी नारायण मंदिर की स्थापना जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज की उपस्थिति में यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री संतोष चौबे (चतुर्वेदी चंद्रिका के सलाहकार मण्डल के पूर्व सदस्य) और डॉ. विनीता चौबे (चतुर्वेदी चंद्रिका की पूर्व संपादक) द्वारा की गई। मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन 4 जून से 9 जून 2023 के मध्य किया गया। शंकराचार्यजी द्वारा इस महत्वपूर्ण अवसर पर श्री संतोष चौबे-डॉ. विनीता चौबे को शुभकामनायें तथा आशीर्वाद दिया आयोजित धर्मसभा को संबोधित भी किया गया। उनके ही सानिध्य में कलश यात्रा और प्रसादी वितरण के आयोजन संपन्न हुये। कार्यक्रम की शुरुआत 4 जून से सुप्रसिद्ध ध्रुपद गायक गुंदेचा बंधुओं की प्रस्तुति के साथ हुई। इसके बाद अन्य दिनों में आयोजित विशेष प्रस्तुतियों में उज्जैन से राजीव-संजीव शर्मा बंधु इंदौर से शोभा चौधरी द्वारा मनमोहक प्रस्तुतियां दी गई। 7 जून को विशेष रूप से लखनऊ से पधारे प्रसिद्ध भजन गायक पं. किशोर चतुर्वेदी (लखनऊ) द्वारा अपने सुरीले भक्तिमय भजनों से उपस्थित दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। एक के बाद एक जैसे ही उन्होंने भजनों की तान छोड़ी, दर्शक मंत्र-मुग्ध होते चले गये। पंडित किशोर जी अवध की लोकधर्मी परंपरा के संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त लोकप्रिय गायक हैं। इस छह दिवसीय उत्सव का अंत सुप्रसिद्ध युवा भजन गायिका मैथिली ठाकुर की भजन संध्या के साथ हुआ। विविध कार्यक्रमों की श्रृंखला के दौरान आये सभी सम्मानित कलाकारों का उत्तरीय और स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया गया। छह दिवसीय कार्यक्रम के

दौरान श्री सिद्धार्थ पल्लवी चतुर्वेदी, सुश्री अदिति चतुर्वेदी सहित बड़ी संख्या में माथुर चतुर्वेदी बांधव तथा अन्य धर्म प्रेमी बंधुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

- सारांश चतुर्वेदी पुत्र श्री श्याम लाल - श्रीमती शालिनी चतुर्वेदी (भिण्ड) ने 10 वी की परीक्षा 75 प्रतिशत अंक से तीन विषयों में विशेष योग्यता के साथ अंग्रेजी, गणित, विज्ञान विषय में प्राप्त कर उत्तीर्ण की।



- कु. गौरी चतुर्वेदी पुत्री श्री दिवाकर चतुर्वेदी - श्रीमती सारिका चतुर्वेदी (फरोली/देहली) सुपौत्री श्री लक्ष्मीपति चतुर्वेदी (कानपुर) ने 12वी की परीक्षा 94% से उत्तीर्ण की एवं स्कूल में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया।



- चि. अपूर्व चतुर्वेदी सुपुत्र श्री तरुण चतुर्वेदी (होलीपुरा/रिषड़ा) ने कक्षा 10 वी की परीक्षा (CBSE) बोर्ड से 97.4% अंकों से उत्तीर्ण की। बधाई।



- कु. रिद्धिमा चतुर्वेदी सुपुत्री श्री मुकुल एवं श्रीमती वंदना चतुर्वेदी (मथुरा/कोटा) ने सीबीएसई बोर्ड के अंतर्गत 12वीं कक्षा की परीक्षा 80.2 प्रतिशत अंकों के साथ पास की उत्तीर्ण की।



- कु. वेदिका चतुर्वेदी सुपुत्री श्री भूषण चतुर्वेदी - श्रीमती रचना चतुर्वेदी (होलीपुरा/ आगरा) ने कक्षा दसवीं की परीक्षा 96.2 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की।



- चि. शिवांश चतुर्वेदी सुपुत्र श्री संजीव चतुर्वेदी (मथुरा /मुंबई) ने कक्षा 12 वी की परीक्षा (महाराष्ट्र बोर्ड) से 90% अंकों से उत्तीर्ण की। बधाई।



चतुर्वेदी चन्द्रिका

- अनुष्का चतुर्वेदी पुत्री समीर कुमार चतुर्वेदी (कमतरी/लखनऊ) ने ICSE बोर्ड के अंतर्गत कक्षा 10 वी की परीक्षा 98 प्रतिशत अंकों से पास की।

- श्री दीपक चतुर्वेदी, जम्मू (जहांगीरपुर/लखनऊ) ने अपने सुपुत्र चि. कार्तिकेय की ऊर्जा पर्यावरण जल कांउसिल (CEEW) नई दिल्ली में रिसर्च एनालिस्ट पद पर नियुक्ति के अवसर पर महासभा सहायतार्थ 1000/- रुपये एवं पत्रिका सहायतार्थ 500/- रुपये हेतु प्रदान किए। बधाई।

- चि. हेमाक्ष चतुर्वेदी पुत्र अमित चतुर्वेदी (फरुखाबाद/मुंबई) ने

वेल्लौर टेक्नॉलाजी इंस्टीट्यूट से CS (कंप्यूटर साइंस) से उत्तीर्ण कर NYU (न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी) में MS करने जा रहे हैं। बधाई।

- अंकित चतुर्वेदी पुत्र दिनेश चन्द्र चतुर्वेदी (लखनऊ) अपने प्रथम प्रयास में Advocate-on-Record (AOR) की परीक्षा उत्तीर्ण कर Supreme Court of India के Advocate-on-Record (AOR) बने। बधाई

- अनुभा चतुर्वेदी पुत्री अनुराग चतुर्वेदी (चन्द्रपुर/कानपुर) ने झाँसी मेडिकल कॉलेज में रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

शाखा समाचार

आगरा

आत्मा अजर है, अमर है। फिर भी यह शरीर नश्वर है और इस को एक दिन पंचतत्व में विलीन होना है। श्री माथुर चतुर्वेदी सभा



आगरा (रजि०) द्वारा मुक्तिधाम बल्केश्वर में 6 सीमेंटेड बेंचस का लोकार्पण माननीय प्रो०एस पी सिंह बघेल (न्याय एवं कानून मंत्री, भारत सरकार) द्वारा किया गया व समाज जन के अनुरोध पर वी. सी. आगरा से शीघ्र इलेक्ट्रॉनिक क्रिमेटरियम की व्यवस्था करने का आग्रह किया। इस अवसर पर श्री

मुकेश चतुर्वेदी (अध्यक्ष), डॉ. कपिल चतुर्वेदी, राजीव चतुर्वेदी, राकेश पाठक, अनिल जी, ऋषि जी, प्रवीन जी, चन्द्रादित्य जी, सुमन्त जी, अमित जी, प्रफुल्ल जी आदि चतुर्वेदी समाज के जन मुख्यतः उपस्थित रहे।

आज दिनांक 13.6.23 को माथुर चतुर्वेदी आगरा सभा रजि. की कार्यकारिणी की बैठक आशुतोष पाठक के निवास पर हुई। जिसमें सदस्यता अभियान को तेज गति प्रदान करने व आगामी महासभा की कार्यकारिणी की बैठक 13.8.23 के कार्यक्रम के आयोजन की रूपरेखा तैयार की गई। बैठक में अध्यक्ष मुकेश जी

सहित राजीव जी, कपिल जी, राकेश पाठक, मनोज जी, दीपक मिश्रा, हर्षमोहन जी, व अमित पाण्डे आदि उपस्थित रहे। इसमें मधुकर पाठक जी की उपस्थिति विशेष रही। सभा के अन्त में अध्यक्ष श्री मुकेश जी द्वारा आशुतोष पाठक को सुमधुर जलपान के लिए धन्यवाद के साथ सभा का विसर्जन अगली मीटिंग के शीघ्र करने की घोषणा के साथ किया गया।

- महामंत्री, राकेश पाठक

कानपुर

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर के चुनाव दिनांक 14 मई 2023 को संपन्न हुए। उसी दिन रात को चुनाव अधिकारी श्री आशुतोष चतुर्वेदी (पी रोड) ने वोटों की गिनती कराई। वैध मतों



के आधार पर कार्यकारिणी पदाधिकारियों में लोकेंद्र जी को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, नवीन जी को उपाध्यक्ष, प्रवेश जी को महामंत्री, प्रशांत को संयुक्त मंत्री, श्रीमती पिकी को संगठन मंत्री, श्रीमती मोहिता को कोषाध्यक्ष, श्रीमती प्रीति को सह मंत्री के पद पर विजयी घोषित किया गया। पूर्व में अध्यक्ष के पद पर श्री स्वतंत्र प्रकाश जी तथा

चतुर्वेदी चन्द्रिका

ग्वालियर

ऑडिटर के पद पर श्री प्रवीण जी निर्विरोध निर्वाचित हो चुके थे। कार्यकारिणी सदस्यों में श्री सिद्धार्थ, श्री रमणीक, श्री संजय, श्री धर्मेन्द्र, श्री संजीव जी, श्री विनय, श्री प्रभास जी (मुन्ना), श्री चंद्रशेखर, श्री अनुज, श्री अजीत विजयी घोषित किए गए।

विजयी प्रत्याशियों का शपथ ग्रहण समारोह बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी स्मृति सार्वजनिक चतुर्वेदी धर्मशाला, कानपुर में दिनांक 4 जून 2023 को शाम 5:00 बजे आयोजित किया गया। शपथ ग्रहण समारोह की अध्यक्षता श्री नाथ जी के द्वारा की गई। उद्घोषक का कार्य श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी के द्वारा किया गया।

गणेश वंदना श्रीमती आभा अनुराग चतुर्वेदी के द्वारा प्रस्तुत की गयी। श्रीमती आभा ने गणेश वंदना गाकर सभी का मन मोह लिया। तत्पश्चात धर्मशाला में स्थित तीनों विभूतियों बाबू ओंकार नाथ जी, स्व. नरेश चंद जी, स्व. उल्फत राय जी की प्रतिमा पर कार्यक्रम अध्यक्ष के द्वारा माल्यार्पण कराया गया।

तत्पश्चात चुनाव अधिकारी श्री आशुतोष चतुर्वेदी (पी रोड) को कार्यकारी अध्यक्ष सत्येंद्र कुमार चतुर्वेदी, महामंत्री प्रवेश चतुर्वेदी के द्वारा आमंत्रित किया गया। उनके द्वारा विजयी प्रत्याशियों को प्रमाण पत्र हस्तगत कराए गए। कार्यक्रम अध्यक्ष द्वारा विजयी प्रत्याशियों को शपथ दिलाई गई। चुनाव अधिकारी श्री आशुतोष चतुर्वेदी के सहयोगियों का सम्मानित किया गया।

कार्यकारी अध्यक्ष के द्वारा नए निर्वाचित अध्यक्ष श्री स्वतंत्र प्रकाश जी का स्वागत किया गया। शपथ ग्रहण समारोह में लगभग 125- 150 सामाजिक बंधुओं की उपस्थिति रही जिसमें मुख्य रूप से सभा संरक्षक अविनाश जी, धीरेंद्र नाथ जी, विकास जी (चुन्ना भैया), श्री मनोज जी, प्रभात जी, श्री आशुतोष जी, धर्मेन्द्र जी, अनुराग जी, श्री प्रणव जी आदि बांधव उपस्थित रहे। निर्वाचित अध्यक्ष तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष के द्वारा सभा को संबोधित किया गया। स्वल्पाहार के बाद कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की गई।

- प्रवेश चतुर्वेदी, महामंत्री

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा, ग्वालियर की साधारण सभा की बैठक दिनांक 28/5/2023 रविवार को नगर निगम मार्केट दौलतगंज में की गई। जिसमें नई कार्यकारिणी का गठन किया



गया। तीन पद पर सामाजिक बंधुओं ने सर्व सम्मति से अध्यक्ष श्री अजय तिवारी जी (चंदवार/ग्वालियर), सचिव श्री आकाश जी (इटावा/ग्वालियर), कोषाध्यक्ष श्री डा. वैभव मिश्रा (जयपुर/ग्वालियर) को जिम्मेदारी दी। संरक्षकगण श्री योगेन्द्र जी, श्री बैकुंठ जी, श्री अनिल चौबे जी, डा. मनोज जी, श्री सुधीर जी। वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर कांत जी, उपाध्यक्ष - श्री राकेश जी (टिल्लू) और श्री करुणेश जी, सह सचिव श्री प्रमोद जी और श्री संदीप जी, कार्यकारिणी सदस्य गण श्री अनूप चौबे जी, श्री अभिषेक जी (गप्पू), श्री मुकुल जी, श्री राजेश जी, श्री सुनील जी, श्री कुलदीप जी, श्री दीपक जी, श्री अभिनव जी, श्री अवनीश जी, श्री दीपकांत जी, श्री प्रशांत जी, श्री कमलकांत जी को नवीन अध्यक्ष जी ने मनोनित किया और समाज हित में श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के सम्बद्ध शाखा सभा ग्वालियर को नई ऊंचाई पर ले जानी की बात हुई। शाखा सभा ने अपनी गतिविधियां सुचारू रूप चलाने के लिए हर संभव प्रयास करने बात हुई। उसके पश्चात डा. मनोज जी माला पहनाकर श्री अजय जी को कार्यभार सौंपा।

बिछड़े स्वजन

* श्रीमती हेमलता मिश्रा पत्नी श्री विनय कुमार मिश्र (मैनपुरी/कानपुर) का स्वर्गवास दिनांक 9 जून 2023 को कानपुर में हो गया।

* श्री योगेश चन्द्र चतुर्वेदी (फरौली/ कासगंज) का स्वर्गवास

दिल्ली में दिनांक 18 जून 2023 को हो गया।

* श्रीमती संध्या चतुर्वेदी पत्नी स्व. शैलेन्द्र चतुर्वेदी (होलीपुरा/कोलकाता) का स्वर्गवास दिनांक 23/06/2023 को कोलकाता में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चन्द्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

पुण्य स्मरण



स्व. दुर्गाप्रसाद - स्व. श्रीमती रामदेई चतुर्वेदी



स्व. भिम्मजीत जी



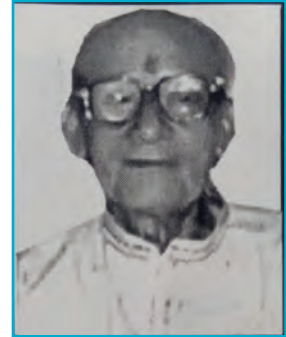
स्व. लालता प्रसाद जी



स्व. भगवती प्रसाद जी



स्व. कृष्णानंद जी



स्व. ध्रुवर दयाल जी



स्व. सतीश चन्द्र जी



स्व. दयानंद जी



स्व. हेमचंद्र जी

-श्रद्धावज्र-

डॉ. दिवाकर नाथ चतुर्वेदी, कामेश्वर नाथ,
भारत चंद्र- ऊषा चतुर्वेदी(वर्तमान उपाध्यक्ष, महासभा),
सुभाष चंद्र - रेखा चतुर्वेदी
एवं शमस्त जौनमाने परिवार, पुराकन्हैरा

निवास : बी.एम.-57 नेहरू नगर, भीपाल (म. प्र.)
मो. 9425010466, 9425008744



Nirmala Construction
COMPANY

निर्मला कंस्ट्रक्शन कंपनी

गवर्नमेंट रजिस्टर्ड कांट्रैक्टर

Akshay Choubey

Proprieter

B.E. (Civil Engineering) – Priyadarshini College, Nagpur
M.Tech – Birla Institute of Technology, Mesra (Ranchi)



Bazariya Ward No.1, Jawalamai
Chouraha, Damoh(M.P.) -470661



+91 8770955872
+91 8602266219

- किसी भी प्रकार की बिल्डिंग, घर, मॉल, कॉम्प्लेक्स, कालोनी के कंस्ट्रक्शन के लिए सेवा का अवसर प्रदान करें। तथा, कंस्ट्रक्शन मशीनर, जेसीबी, फियोरी, पोकलेन, के लिए संपर्क करें!
- हमेशा स्नेह और सहयोग देने के लिए माननीय सतीश चतुर्वेदी और आभा चतुर्वेदी (नागपुर) को विशेष धन्यवाद !

Private Construction Project



Government Construction Project



दमोह परिवार - स्व. कैलाश नाथ चौबे(बगियावाले) , पुत्र - विनोद, देवेंद्र, गजेंद्र, राजेंद्र, स्व. नीरज चौबे।

भाई - तनय, सार्थक, विभोर, सुयोग, यश चौबे।

विनम्र श्रद्धांजलि



स्वर्गीय रमेश चंद्र चतुर्वेदी, Prof. (Retd.) IIT Bombay

(सुपुत्र श्री सतीश चंद्र (झाऊ लाल) एवं श्रीमती चमेली देवी)

(मैनपुरी/लखनऊ/सिलवासा)

16th नवंबर 1935 - 3rd मई 2023

(Baisakh shuklapaksh trayodishi. Vikram samvat 2080)

शोकाकुल "साकेत" परिवार

पत्नी: श्रीमती उषा

भाई- भाभी : श्री राकेश - उर्मिला
श्री गणेश - सुनीला

बहन : कंचन

पुत्र- बहु : शशांक- तृप्ति

पुत्री- दामाद : प्राची- राजेश
रुचि- प्रणय

भतीजे- बहु : कौस्तुभ- रिचा
सुमेध - देविका, हर्षित- सौम्या

भतीजी- दामाद : सौम्या- गौरव
तन्वी - खुशांक

भांजा-बहू : गौरांग-रितु

बच्चे : सुचि, छवि, भुवि, अन्वी, विहान,
आरव, शौर्य, अर्जुन, देव एवं अथर्व।

Phone: 9327999333/ 9453934711

R.N.I. NO. MAR/2000/2438

डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021-23

“चतुर्वेदी चन्द्रिका” जुलाई 2023

पत्र व्यवहार का पता- “चतुर्वेदी चन्द्रिका” ई-8/जी-2/255,

गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-39,

ईमेल -sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com



Lokmanya Tilak Jankalyan Shikshan Sanstha's

PRIYADARSHINI COLLEGE OF ENGINEERING



By National Assessment & Accreditation Council

AN AUTONOMOUS INSTITUTION



Accredited by National Board of Accreditation
for Mech. Engg., Elect & Telecom, Electrical Engg.,
Civil Engg. for 3 years upto 30-06-2024
Chemical & CSE upto 30/06/23

GLORIOUS

33 Years of
Academic Excellence



A PREMIER COLLEGE WITH **33** YEARS OF PROVEN TRACK RECORD.

- Highly qualified senior academia & Faculty with industrial exposure.
- Focus on new age pedagogy.
- Close interaction with industry & Central Placement cell.
- Personality enhancement and Soft skill development & Psychological counseling.
- Foreign language modules.
- Enriched campus experience & State of the art sports and recreational facilities.
- Experimental learning through live projects
- Well stocked library with national and international journals

The above is but a brief overview of the college, interested students are welcome to have an interaction with the faculty at the campus or have further information on <http://www.pcenagpur.edu.in>



Dr. Satish Chaturvedi, Chairman, LTJSS